संस्करण ३
Edition 3

वर्ष २,अंक १,जनवरी २०२६
Vol 2,Issue 1,January 2026

ARAI
Driving Mobility through Innovation since 1966

स्पंदन

JANUARY 2026

गृह प्रकाशनः
दि ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया, पुणे (महाराष्ट्र), भारत
(भारी उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार से संलग्न मोटर वाहन उद्योग का अनुसंधान संस्थान)

In-house Publication of:
The Automotive Research Association of India, Pune (Maharashtra) India
Research Institute of The Automotive Industry with the Ministry of Heavy Industries, Govt. of India

Paintings by Mr. Rahul Mahajan, Sr. Dy Director, EDS

Sr. No.	विषय–सूची I TABLE OF CONTENTS	PAGE NO.
1	निदेशक का संदेश I Message From Director	01
2	संपादक का संदेश I Message From Editor	02
3	उपलब्धियां I Achievements	03
4	महत्वपुर्ण हस्तियों का दौरा I Visit of Important Personalities	06
5	एआरएआई घटनाएँ I Happenings in ARAI	08
6	कर्मचारी मंच I Employee Spotlight	14
7	समारोह I Celebrations	57
8	कॉपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वि I Corporate Social Responsibility	89
9	कर्मचारी संवाद I Employee Talk	91
10	एआरएआई का इतिहास (२००१–२०१०) I History of ARAI (2001-2010)	94

निदेशक का संदेश | MESSAGE FROM DIRECTOR

Dear Readers,

I am happy to introduce the third edition of Spandan, ARAI's in-house magazine. This edition shows our dedication to sharing knowledge and building a strong community among our employees. It celebrates our successes and the teamwork that makes our organization strong.

This year, we proudly received European Alignment Certificate from Bridgestone Corporation for completing Rolling Resistance Lab Alignment. We also handed over Production Linked Incentive Certificates for 100th and 101st applications in the automobile sector thru Secretary, Ministry of Heavy Industries, Govt. of India. We have also received Letter of Appreciation from ISHRAE at the COOL Conclave for our efforts in reducing carbon emissions and supporting India's net-zero goals. It was our honor to receive Public Procurement Excellence Award at Next-Gen Procurement & Supply Chain Conference 2025, organized by Institute for Supply Management. I thank the ARAI Team for these achievements.

ARAI has now entered its Diamond Jubilee Year, celebrating 60 years of innovation, dedication and excellence. As we mark this milestone, let us honour the visionaries who built ARAI and embrace the challenges ahead. Together, we are advancing toward a safer, greener and smarter mobility world, where each innovation drives progress and every solution inspires future generations.

We are also hosting the 19th edition of Symposium on International Automotive Technology, viz., SIAT 2026, from 28-30 January, 2026. SIAT 2026 is a platform for advancing the auto industry at a pivotal moment. Building on nearly two decades of tradition, this symposium promotes global platform for innovation, collaboration and knowledge sharing. It will feature over 250 technical papers, keynotes and plenary sessions from 14 countries.

Spandan is a special magazine that showcases technical and creative contributions of ARAI employees. This edition includes stories, poems, articles, photographs, anecdotes and paintings that capture diverse thoughts and experiences from our ARAI family. It brings together all our activities, celebrates our successes and shows our dedication to leadership through integrity, innovation and positive change. I hope you will enjoy the reading ARAI activities.

I thank all the contributors for their creativity and our readers for their support. Your feedback is welcome.

Happy reading!

Dr. Reji Mathai
Director-ARAI

प्रिय पाठकों,

मुझे एआरएआई की इन-हाउस मैगज़ीन स्पंदन का तीसरा संस्करण पेश करते हुए खुशी हो रही है। यह संस्करण हमारे कर्मचारियों के बीच ज्ञान साझा करने और एक मज़बूत समुदाय बनाने के प्रति हमारे समर्पण को दिखाता है। यह हमारी सफलताओं और टीम कार्य का जश्न मनाता है जो हमारे संगठन को मज़बूत बनाता है।

इस साल, हमें रोलिंग रेजिस्टेंस लैब अलाइनमेंट पूरा करने के लिए ब्रिजस्टोन कॉर्पोरेशन से गर्व से यूरोपियन अलाइनमेंट प्रमाणपत्र मिला। हमने भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्रालय के सचिव के माध्यम से ऑटोमोबाइल क्षेत्र में 100वें और 101वें अनुप्रयोग के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन प्रमाणपत्र भी सौंपे। हमें कार्बन उत्सर्जन कम करने और भारत के नेट-ज़ीरो लक्ष्यों को समर्थन करने के हमारे प्रयासों के लिए COOL कॉन्क्लेव में ISHRAE प्रशंसा पत्र भी मिला है। इंस्टीट्यूट फॉर सप्लाई मैनेजमेंट द्वारा आयोजित नेक्स्ट-जेन प्रोक्योरमेंट एंड सप्लाई चेन कॉन्फ्रेंस २०२५ में सार्वजनिक क्रय उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करना हमारे लिए सम्मान की बात थी। मैं इन उपलब्धियों के लिए एआरएआई टीम को धन्यवाद देता हूँ।

एआरएआई अब अपने डायमंड जुबली वर्ष में प्रवेश कर चुका है, जो नवाचार, समर्पण और उत्कृष्टता के 60 साल पूरे होने का जश्न मना रहा है। जैसे ही हम इस मील के पत्थर को पार कर रहे हैं, आइए उन दूरदर्शी लोगों का सम्मान करें जिन्होंने एआरएआई का निर्माण किया और आगे की चुनौतियों को स्वीकार करें। साथ मिलकर, हम एक सुरक्षित, हरित और स्मार्ट गतिशीलता की दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ हर नवाचार प्रगति को आगे बढ़ाता है और हर समाधान आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता है।

हम 28-30 जनवरी, 2026 को सिम्पोज़ियम ऑन इंटरनेशनल ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी, यानी सिएट 2026 के 19वां संस्करण का भी मेजबानी कर रहे हैं। सिएट 2026 एक महत्वपूर्ण मोड़ पर ऑटो उद्योग को आगे बढ़ाने का एक मंच है। लगभग दो दशकों की परंपरा पर आधारित, यह सिम्पोज़ियम नवाचार, सहयोग और ज्ञान साझा करने के लिए एक वैश्विक मंच को बढ़ावा देता है। इसमें 14 देशों के 250 से ज़्यादा टेक्निकल पेपर, कीनोट और प्लेनरी सेशन होंगे।

स्पंदन एक खास मैगज़ीन है जो एआरएआई कर्मचारियों के तकनीकी और रचनात्मक योगदान को दिखाती है। इस संस्करण में कहानियाँ, कविताएँ, लेख, तस्वीरें, किस्से और चित्रकारी शामिल हैं जो हमारे एआरएआई परिवार के विविध विचारों और अनुभवों को दर्शाते हैं। यह हमारी सभी गतिविधियों को एक साथ लाता है, हमारी सफलताओं का उत्सव मनाता है और ईमानदारी, नवाचार और सकारात्मक बदलाव के माध्यम से नेतृत्व के प्रति हमारे समर्पण को दिखाता है। मुझे उम्मीद है कि आपको एआरएआई की गतिविधियों को पढ़ने में आनंद आएगा।

मैं सभी योगदानकर्ताओं को उनकी रचनात्मकता के लिए और हमारे पाठकों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूँ। आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है।

गृह-पत्रिका का आनंद लें ।

डॉ. रेजी मथाई
निदेशक-एआरएआई

Dear Readers,

Welcome to the third edition of Spandan Magazine, where we continue to explore the vibrant pulse of ideas, stories, and perspectives that make our community special. As we mark this milestone, I'm happy to think about how we've grown since our first issue. Spandan has changed into a busy space for sharing thoughts. This edition adds to that base, showing many different voices that challenge, inspire, and bring us together.

One of the exciting developments in this edition is increase in contributions from our employees. We've seen a remarkable increase in submissions from team members across departments, bringing fresh insights and personal narratives that enrich our content. This shows not only highlights the creativity and passion within our organization but also strengthens the magazine's authenticity, as employees share their unique experiences and viewpoints. It's a proof of the team spirit that Spandan stands for, showing that everyone has a story to tell.

In this edition, we look at topics like new ideas at work and personal growth stories. All of this is tied to the human side that makes our stories interesting. From essays about staying strong to creative pieces on different cultures, the contributions show a mix of ideas that match our changing world. This edition reminds us that in times of fast change, accepting different views helps us move forward and understand better.

As we look ahead, I encourage all readers and contributors to keep the momentum going. Whether you're an employee with a tale to tell or a reader with feedback to share, your involvement is what keeps Spandan alive and thriving. Let's continue to amplify voices, foster dialogue, and celebrate the shared heartbeat of our community. Thank you for being part of this journey. Here's to many more editions filled with inspiration and connection.

I hope you find this publication interesting. If you have any suggestions, please feel free to write to me thipse.edl@araiindia.com

Warm regards,

Dr. S. S. Thipse
Editor - ARAI Spandan

प्रिय पाठकों,

स्पंदन मैगज़ीन के तीसरे संस्करण में आपका स्वागत हैं, जहाँ हम उन विचारों, कहानियों और परिप्रेक्ष्यों को जानना जारी रखेंगे जो हमारी कम्युनिटी को खास बनाती हैं। इस माइलस्टोन को मार्क करते हुए, मुझे यह सोचकर खुशी हो रही हैं कि हम अपने पहले अंक के बाद से कितना आगे बढ़े हैं। स्पंदन विचारों को साझा करने के लिए एक सक्रिय मंच बन गया हैं। यह संस्करण कई अलग-अलग स्वरों को समेटे उस आधार को और बढ़ाता हैं, जो हमें चुनौती देते हैं, प्रेरित करते हैं और एक साथ लाते हैं।

इस संस्करण में कर्मचारियों के सहयोग में बढ़ोतरी एक रोमांचक विकास हैं। हमने अलग-अलग विभागों में टीम सदस्यों की प्रविष्टियों में काफ़ी बढ़ोतरी देखी हैं, जिससे हमारे अंतर्वस्तु को बेहतर बनाने वाली नई अंतर्दृष्टि और व्यक्तिगत आख्यान मिली हैं। यह न केवल हमारे संगठन के अंदर रचनात्मक और शौक पर प्रकाश डालता हैं, बल्कि पत्रिका की प्रामाणिकता को भी मज़बूत करता हैं, क्योंकि कर्मचारी अपणा विशिष्ट अनुभव और दृष्टिकोण साझा करते हैं। यह उस टीम भावना का प्रमाण हैं जिसका स्पंदन प्रतीक हैं, यह दिखाता हैं कि हर किसी के पास बताने के लिए एक कहानी होती हैं।

इस संस्करण में, हम काम पर नए विचार और व्यक्तिगत विकास की कहानियों जैसे विषयों पर दृष्टी डालते हैं। यह सब इंसानी पहलू से जुड़ा हैं जो हमारी कहानियों को दिलचस्प बनाता हैं। मज़बूत बने रहने के बारे में निबंधों से लेकर अलग-अलग संस्कृति पर रचनात्मक खंडों तक, योगदान में ऐसे विचारों का मिश्रण दिखता हैं जो हमारी बदलती दुनिया से मेल खाते हैं। यह संस्करण हमें याद दिलाता हैं कि तेज़ी से बदलते समय में, अलग-अलग विचारों को स्वीकार करने से हमें आगे बढ़ने और बेहतर समझने में मदद मिलती हैं।

जैसे-जैसे हम आगे देखते हैं, मैं सभी रीडर्स और योगदानकर्ताओं को यह गती बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। चाहे आप एक कर्मचारी हों जिसके पास बताने के लिए कोई कहानी हो या एक पाठक हों जिसके पास साझा करने के लिए प्रतिक्रिया हो, आपका शामिल होना ही स्पंदन को ऊर्जावान करता हैं और आगे बढ़ाता हैं। आइए आवाज़ों को बुलंद करते रहें, बातचीत को बढ़ावा दें, और हमारे समुदाय की साझा धड़कन का उत्सव मनाएं। इस सफ़र का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद, प्रेरणा और जुड़ाव से भरे और भी कई संस्करण आने वाले हैं।

मुझे आशा हैं कि आपको यह प्रकाशन रोचक लगेगा। यदि आपके कोई सुझाव हैं, तो कृपया मुझे thipse.edl@araiindia.com पर लिखें।

हार्दिक शुभकामनाएँ,

डॉ. एस. एस. ठिपसे
संपादक – एआरएआई स्पंदन

ARAI achieves milestone in Bio-diesel Engine Evaluation

ARAI successfully completed its developmental project evaluating CPCB IV+ compliant diesel engines with B20 and B30 bio-diesel blends, demonstrating significant reduction in CO, HC, NOx, PM and smoke emissions compared to standard diesel. A rigorous 500-hour durability test confirmed no deviations in engine power, efficiency or emissions, validating compatibility of Engines. Dr. Reji Mathai, Director-ARAI, handed over the official report to Mr. Gaurang Shah, Chairman and Managing Director of Kotyark Industries Ltd., with gratitude extended to Kirloskar Oil Engines Limited for engine support. This achievement aligns with India's Bio-diesel Policy, promoting cleaner energy solutions.

ARAI achieves PLI milestone with 100th and 101st certificates

Shri Kamran Rizvi, Secretary-Ministry of Heavy Industries (MHI), handed over the 100th Production Linked Incentive (PLI) Certificates to Ms. Suman Mishra, MD & CEO of Mahindra Last Mile Mobility Ltd. and also 101st Certificate to Mr. Sushant Naik, VP & Global Head-Government and Public Affairs at Tata Motors Ltd., in the presence of Dr. Hanif Qureshi, Additional Secretary of MHI and Dr. Reji Mathai, Director-ARAI. This event marked the milestone of ARAI issuing 100th and 101st PLI certificates under the Automobile Sector. The Auto-PLI Scheme, an MHI initiative, promoted manufacturing of Advanced Automotive Technology products, attracted investments, boosted domestic production, reduced import dependence, advanced electric and green mobility, created jobs and enhanced global competitiveness, thereby strengthening India's Aatmanirbhar Bharat journey. ARAI expressed gratitude to MHI for this visionary scheme and committed to achieving further milestones to establish India as a global auto industry leader.

Celebrating a Milestone of
100th Auto-PLI Certificate of M/s Mahindra Last Mile Mobility Ltd.

Celebrating a Milestone of
101th Auto-PLI Certificate of M/s Tata Motors Ltd.

ARAI honored with ISHRAE Appreciation for Decarbonization Excellence

ARAI received Letter of Appreciation from ISHRAE at COOL Conclave for its outstanding efforts in reducing carbon emissions and supporting India's Net Zero Emissions Mission. Dr. Chetan Singh Solanki, known as the Solar Man of India, graced the occasion and presented the certificate to ARAI for Corporate Excellence in Decarbonization. ARAI expressed heartfelt thanks and reaffirmed its commitment to advancing a sustainable future.

ARAI receives prestigious Public Procurement Excellence Award

ARAI was honored with the award for Public Procurement Excellence at Next-Gen Procurement & Supply Chain Conference 2025, organized by Institute for Supply Management. This accolade highlighted the team's strong commitment to transparency, integrity and strategic public procurement practices. ARAI also acknowledged and commended the tireless efforts and dedication of its team, stakeholders and committees in achieving this milestone.

ARAI Achieves Breakthrough in e-Axle Technology

ARAI's Powertrain Design Lab achieved a ground-breaking milestone in E-axle development for SCV/LCV applications, setting a new industry benchmark. The team designed, prototyped and tested E-axles, which delivered an impressive 130 km range in real-world conditions and completed 60,000 km of rigorous testing without any issue.

ARAI received European alignment certificate from Bridgestone for rolling resistance lab milestone

ARAI was pleased to receive European Alignment Certificate from Bridgestone Corporation for successful completion of Rolling Resistance (RR) Lab Alignment. The certificate was presented to Dr. Reji Mathai, Director-ARAI, by Mr. Rajarshi Moitra, Deputy Managing Director of Bridgestone India, in the presence of key people including Mr. Yoshikazu Nagayama, Director of Product Management; Mr. Prashant Jagetiya, Director of Strategic Planning; and Mr. Sudershan Singh Gusain, General Manager of Training & S&R, Bridgestone, along with other senior ARAI officials viz as Mr. A.A. Badusha, Mr. Vijay Pankhawala, Mr. Vikram Shinde and Dr. Nagesh Walke. This achievement marked a critical milestone for ARAI, as tyre rolling resistance is a sensitive and vital parameter for vehicle fuel economy. In collaboration with Bridgestone, ARAI had advanced development, testing and knowledge enhancement in tyre technologies, aiming to deliver safe and sustainable automotive solutions for Indian roads.

Visit of Shri Abhay Manohar Sapre, former Judge of Supreme Court of India and Chairman of the Supreme Court Committee on Road Safety (SCCoRS)

Visit of Shri Sanjay Bandyopadhyay, IAS, Member, Supreme Court Committee

Visit of Shri Rajesh Verma, Chairperson, Commission for Air Quality Management

Visit of Dr. Anitha Gupta, Department of Science & Technology (DST) Govt. of India

Visit of Dr. Lonneke Driessen, Director–Open Charge Alliance (OCA), Netherlands

Visit of Senior Officials of EIM

Visit of Shri Sanjay Khanna, CMD, BPCL and Senior officials

Visit of Mr. Pham Sanh Chau, MD-CEO VinGroup Asia Operations

Visit of Senior Officials of Hyundai

Launch of WVSCoP module for digital vehicle safety compliance

As a part of ARAI's ongoing efforts to digitalize its services, Whole Vehicle Safety Conformity of Production (WVSCoP) Module was launched and seamlessly integrated with CMVR-Type Approval Software (CMVR-TAS) platform. The module was officially inaugurated by Dr. Reji Mathai, Director-ARAI, on 16th July 2025 in the presence of Shri Abdul Jabbar Akbar Badusha, Senior Deputy Director and other Senior Executives of ARAI. This initiative aligned with MoRTH Notification No. GSR 393(E) dated 7th June 2021, which mandated WVSCoP compliance for vehicles in L, M and N categories as well as E-Rickshaw and E-Cart models. Following the launch, ARAI began accepting WVSCoP requests exclusively through the new online system, enabling OEMs to initiate their second cycle of compliance and significantly enhancing application processing, data management and monitoring.

India's first gasoline fuel vapour canister ageing bench to boost WLTP emission certification

ARAI announced inauguration of India's first certification-capable Gasoline Fuel Vapour Canister Ageing Bench at Homologation Technology Centre (HTC) in Pune, marking significant advancement in emission certification capabilities ahead of WLTP regulation implementation. This development aligned with draft Notification No. S.O. 270 (E) dated 28th April 2025, that outlined adoption of Worldwide Harmonized Light Vehicles Test Procedure (WLTP) under AIS 175. During the event, Dr. Reji Mathai, Director-ARAI, emphasized India's emission control roadmap, including innovations like E20 and biofuels for green mobility and urged the auto industry to collaborate on solutions tailored to domestic needs.

ARAI inaugurates India's first PEMS pro-cart for remote emissions testing

ARAI inaugurated India's first-of-its-kind remote workstation for Portable Emissions Measurement System (PEMS) testing, known as PEMS Pro-Cart. Designed for safe and efficient transportation of the PEMS system to test sites, it featured an integrated workstation for real-time monitoring and data analysis. This innovation addressed the growing demand for testing under Automotive BS-VI and upcoming non-road CEV/TREM stage V norms, enabling Heavy Duty ISC and non-road ISM tests at various locations across India. It facilitated Real Drive Emission (RDE) tests in fields like mines, construction sites and farms for non-road applications, supporting ARAI's commitment to providing top-tier services for reducing vehicle pollution.

ARAI hosts JAPIA delegation for Annual Meet with Test Agencies

ARAI hosted the JAPIA delegation for their annual meet with test agencies in India, where ARAI Director Dr. Reji Mathai, Senior Deputy Directors Shri. Abdul Jabbar Akbar Badusha, Dr. B V. Shamsundara, and Shri. Rahul Mahajan, along with the officials of Safety and Homologation Lab and Passive Safety Lab, interacted with the team. The visit aimed to foster synergy between Japanese auto component manufacturers and ARAI, while updating the JAPIA team on new automotive regulatory trends and approval procedures. Attendees included Makiko Kuramae san, Mr. Ryota Yamauchi san, Shinichi Takeda san, Hiroko Nemoto san, and Shri Deepak MK, with other delegates joining online. Building on visits since 2003, ARAI committed to maintaining this legacy and delivering top services to JAPIA and its members.

ARAI organizes Blood Donation Camp to give back to society

In the powerful act of solidarity, ARAI organized Blood Donation Camp on 1st August 2025, where employees and community members united to contribute to societal welfare, demonstrating strong commitment to community service. Colleagues rolled up their sleeves to save lives, highlighting the importance of every donation in making meaningful difference. "Hearts united, sleeves rolled up: Together, we're saving lives – one donation at a time." This initiative truly embodied humanity and collective care and the organization expressed deep gratitude for the selfless support received from all the participants.

एआरएआई में संचालित राजभाषा प्रशिक्षण- बैचः जुलाई – नवंबर 2024 के उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों को निदेशक, एआरएआई के कर-कमलों से प्रमाण-पत्र का वितरण

एआरएआई कार्मिकों के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण योजना के तहत जुलाई – नवंबर 2024 अवधि में राजभाषा प्रशिक्षण का संचालन किया गया। इस प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षक के तौर पर श्री. विनोद कुमार शर्मा को नियुक्त किया गया। इस बैच में कुल 32 प्रशिक्षार्थियों में प्राज्ञ पाठ्यक्रम में 19 एवं प्रवीण पाठ्यक्रम में 13 कार्मिकों ने नामांकन लिया। निश्चित अवधि के दौरान इसकी नियमित कक्षाएं संचालित करवाई गईं, जिसमें कार्यालयीन प्रयोग हेतु प्रशिक्षक महोदय ने प्रशिक्षार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार राजभाषा हिंदी की औपचारिक एवं व्यावहारिक ज्ञान दिया। निरंतर प्रशिक्षण, अध्ययन एवं अभ्यास के फलस्वरूप इनका पाठ्यक्रम पूर्ण हुआ और सभी प्रशिक्षार्थियों की भाषाई पकड़ दृढ़ हुई और ये कार्यालयीन पत्राचारादि एवं संप्रेषण में भी कुशल हुए। तत्पश्चात 19 मई 2025 को इनकी परीक्षा की तिथि घोषित हुई और ये सभी प्रशिक्षार्थी इस परीक्षा में शामिल हुए। कुछ महीने बाद इसका परिणाम जाारी किंया गया जिसमें नामांकित शत-प्रतिशत प्रशिक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। इनमें से उत्तीर्ण हुए कुल 32 प्रशिक्षार्थियों को दिनांक 28/08/2025 को आयोजित एआरएआई की '12वीं आंतरिक राजभाषा बैंठक' में डॉ. रेजी मथाई, निदेशक- एआरएआई एवं श्री. श्याम बाबू कश्यप, राजभाषा अधिकारी सह विभागाध्यक्ष- राजभाषा अनुभाग, एआरएआई और अन्य आंतरिक राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्यों की उपस्थिति में प्रमाणपत्र का वितरण डॉ. रेजी मथाई, निदेशक- एआरएआई के कर कमलों द्वारा किया गया।

Training on revised Purchase Procedures

In response to recent amendments to ARAI's Purchase Procedures and various Office Memorandums of Government of India, detailed training program was conducted on 20th August 2025 to ensure clarity and compliance among stakeholders. Training covered procurement framework, revised slabs, planning and proposal preparation, tendering and evaluation processes, e-procurement platforms, preferences and applicability, contract award, LD, IC and payment processes, code of integrity, vigilance, grievances, audits and gaps to address. Selected ARAI Engineers were identified for participation and separate sessions were arranged for HTC and FID employees.

Machine safety training for Prototype Manufacturing Department

On 25th August, 2025, EHS World organized detailed Training Session on machine safety. Mr. Pratik Kadam trained more than 20 employees from Prototype Manufacturing Department. The goal was to improve safety awareness at work. The session covered how to check machines, managing dangers and risks, value of a safety-first mindset, choosing and caring for protective gear, duties of workers and bosses, safe ways to handle machines rules for specific machines, what to do and not to do as well as reporting of accidents. The training helped everyone learn how to spot and reduce risks. This created a safer and more efficient workplace.

Launch of ARAI's Diamond Jubilee Celebrations

ARAI commenced its Diamond Jubilee celebrations to commemorate 60 years of innovation and excellence in automotive research and development. Shri HD Kumaraswamy, Hon' Union Minister of Heavy Industries, Government of India, unveiled the commemorative logo symbolizing infinite possibilities for mobility innovations. The year-long festivities, spanning from December 2025 to January 2027, featured activities under four key themes: Branding, Customer Experience Enhancement, Employee Engagement and Organization Legacy & Facelift. These included inaugurations of advanced laboratories and centres, youth engagement through competitions and hackathons, knowledge-sharing sessions by innovators and industry leaders and nationwide awareness programs promoting safe and sustainable mobility in India. Hon' minister commended ARAI's pioneering contributions to India's automotive eco-system and extended best wishes for future endeavours.

वेध दिवाळीचे

दसरा झाला की साहजिकच सगळ्यांना दिवाळीचे वेध लागतात. तसं पाहिलं तर प्रत्येकजणच या न त्या कारणाने दिवाळसणाची वाट पाहत असतो. शालेय मुले दिवाळी सुट्टयांकरिता, चाकरमानी बोनसकरिता, व्यावसायिकांना वाढती उलाढाल, कुणी आप्तेष्टांच्या भेटीगाठींकरता, तर कुणी मुहूर्तावर विशेष खरेदीकरिता, इत्यादी अनेक बाबींसाठी प्रत्येकजण दिवाळीची वाट बघत असतो. दिवाळी हा संपूर्ण भारतवर्षातील अत्यंत महत्त्वाचा, आनंददायक, उत्साहवर्धक आणि प्रकाशाचा सण आहे. आता परदेशातही हा सण मोठ्या उत्साहाने साजरा केला जातो. हा सण अंधःकारावर प्रकाशाचा, अज्ञानावर ज्ञानाचा आणि वाईटावर चांगुलपणाचा विजय दर्शवतो. दिवाळी हा फक्त दिव्यांचा सण नसून आनंद, ऐक्य आणि परंपरेचे प्रतीक आहे.

खरंतर मला दिवाळी येण्याच्या अगोदरचे पंधरा दिवस खूप भावतात. दिवाळी सणाच्या तयारीचे हे दिवस मोठा आनंद देतात. घराघरात होणारी साफसफाई, घरातील जळमटे, अडगळीचे सामान (नको असलेली वस्तू) काढून टाकल्यामुळे घराला नवचैतन्य प्राप्त होते. तीच प्रसन्नता मनातही उमलून येत मनही उजळून निघते. लक्ष्मी मातेला प्रसन्न करून घेण्यासाठी ही सारी उठाठेव असते. त्यानिमित्ताने सगळीकडे तयार होणाऱ्या ''ऋुरश्रळ तळलशी'' खूप हव्याहव्याशा वाटतात. गोड गुलाबी थंडीची चाहूल या आनंदाच्या लहरींना द्विगुणित करते. या दिवसात प्रकाशित होणाऱ्या दिवाळी अंकाचे गारूड या डिजिटल युगात आजही वाचकांच्या मनावर कायम आहे. वेगवेगळया विषयावरचे सामाजिक/वास्तविक लेख समाजमनाचा ठाव घेतात. कथा, कविता आणि प्रवास वर्णने वाचकांसाठी पर्वणीच असते. समाजात वर्षभर घडणाऱ्या गोष्टींचा धावता आढावा हे लेख घेत असतात. जेष्ठ नागरिक दिवाळी अंकांच्या वाचनासाठी ग्रंथालयाच्या संपर्कात असतात.

नोकरी-व्यवसायानिमित्त बाहेर असणारे अनेकजण घराकडे धाव घेतात. रेल्वे, बसस्थानके गजबजलेली दिसतात. सगळीकडे वेगळाच उत्साह वातावरणात पसरतो. कुटुंबासोबत

एकत्र दिवाळी साजरी करण्याची आस प्रत्येकाच्या मनात असते. हा सण एकत्र साजरा करून मायेचा ओलावा जपण्याची ती एक आपसूक ओढ असते. यासाठी हा सगळा प्रवास अन् खरेदीचा आटापिटा केला जातो. या दिवसांत बाजारपेठा पूर्ण गजबजलेल्या असतात. आकाश कंदील, पणत्या, रांगोळीचे रंग, फुलांची तोरणं, विद्युत रोषणाई या सगळ्या गोष्टी मनाला मोहित करून टाकतात. घराबाहेर, दुकानाबाहेर होणारी विद्युत रोषणाई पाहताच राहावी असं वाटतं. ही रोषणाई जणू प्रत्यक्ष आजच दिवाळी आहे याची जाणीव करून देत असते. छोट्यांसाठी फटाक्यांचे स्टॉल तर मोठा आनंदाचा ठेवा असतो. मुलं किल्ल्यांसाठी साहित्य आणतात, काहीजण पहिल्या फुलबाजीचा आनंद लुटतात. या गोष्टी प्रत्येकालाच बालपणीच्या दिवाळीची आठवण करून देतात. नाही म्हटलं तरी प्रत्येकजण हे सगळं पाहून आपल्या बालपणात डोकावतोच. किती हट्ट करायचो या सगळ्यांसाठी आपण! कपडेलत्त्यांची खरेदीची तर या काळात रेलचेल असते.

प्रत्येकजण आपापल्या क्रयशक्तीच्या दुप्पट पैसे खर्च करत खरेदी करत असतो असं म्हटलं तरी वावगं ठरणार नाही! काळानुरूप यात बदल होत असले तरी सणाची अन् खरेदीची परंपरा कायम आहे. आजकाल रेडिमेड कपड्यांचा जमाना जरी असला तरी शिंप्याच्या दुकानात गर्दी असतेच. आता ऑनलाईन शॉपिंग करण्यासाठी बरेच प्लॅटफॉर्म उपलब्ध आहेत. ऑनलाईन शॉपिंग करण्यासाठी मोठमोठाल्या ऑफर्स सणापूर्वी लावून ग्राहकाला खरेदी करण्यासाठी उद्योक्त करतात. या निमित्ताने बाजारपेठा मोठी उलाढाल करतात. आजच्या डिजिटल युगात खरेदीची ही परंपरा नव्या स्वरूपात पुढे जात आहे.

दिवाळी पहाट या विशेष कार्यक्रमाचे आयोजन बऱ्याच ठिकाणी होत असते. या दिवाळी पहाटेचा एक मोठा प्रेक्षक वर्ग या कार्यक्रमाचे आतुरतेने वाट बघत असतो. तसेच कोणत्या दिवशी कोणत्या कार्यक्रमाला हजेरी लावायची याचे नियोजन करत असतो. या कार्यक्रमात एक वेगळीच उत्सवाची आणि सांस्कृतिक उर्जा असते.

या सणाचा एक अत्यंत महत्त्वाचा आणि चविष्ट भाग म्हणजे दिवाळीचा फराळ. दिवाळीच्या काही दिवस आधीच घराघरात फराळाची तयारी सुरू होते. ही परंपरा अनेक पिढ्यांपासून चालत आलेली आहे. घरातील स्त्रियांचं योगदान या तयारीत फार मोठं असतं. सगळे जण एकत्र येतात, कामं वाटून घेतात, आणि गप्पा-गोष्टी करत फराळ तयार करतात. लहान मुलं उत्साहाने मदत करतात, तर मोठे अनुभव सांगतात. हे क्षण कुटुंबात एकोपा निर्माण करतात. पारंपरिक पद्धतीने बनवले जाणारे पदार्थ हे केवळ चविष्ट नसतात, तर त्यामागे कौशल्य, संयम आणि प्रेम असतं. लाडू, करंजी, चकली, चिवडा इत्यादी पदार्थांचा सुगंध घरभर दरवळत राहतो. लहानांपासून मोठ्यांपर्यंत सगळेच आनंदाने या कामात हातभार लावतात. हा फराळ म्हणजे संस्कृती, परंपरा आणि प्रेमाचा स्वाद आहे. या फराळामुळे दिवाळीचा आनंद द्विगुणित होतो. यातूनच आपली संस्कृती जिवंत राहते.

प्रत्यक्षात आनंदपर्वाला उधाण येऊन दिवाळीचे चार दिवस हा हा म्हणता संपून जातात. पण त्या आधीचे पंधरा दिवस हे तयारी, उत्साह, आणि एकत्रितपणाचे हेच खरे सणाचे गाभा आहेत. या दिवसांतूनच आपली संस्कृती, आपले नातेसंबंध आणि आपला आनंद जपला जातो...

ऊन सावल्या येतील जातील
कोंब जपावे आतील हिरवे
चला दिवाळी आली आहे
ओंजळीत घ्या चार दिवे ।।

पहिला लावा थेट मनातच
तरीच राहील दूसरा तेवत
घरात आणि प्रियजनांच्या
आयुष्यावर प्रकाश बरसत ।।

तिसरा असू दे इथे अंगणी
उजेड आल्या गेल्यानाही
चौथा ठेवा अशा ठिकाणी
जिथे दिवाळी माहित नाही ।

श्री. विठ्ठल पाडसे
ई.सी.एल.

अमिताभ! : ११ ऑक्टोबर २०२३

जगभरच्या चित्रपटसृष्टीला पडलेलं एक अफलातून स्वप्न! साऱ्या भारतीय जनमानसावर गारुड घालणाऱ्या चित्रपटांच्या या स्वप्नसृष्टीचा अनभिषिक्त सम्राट.

आज पन्नाशीत असणाऱ्या बहुतेकांना अमिताभ ऐन भरात असताना पहायला मिळाला आहे. त्याचा अभिनय पहाता पहाता आपली वर्षं पुढं गेली पण अमिताभ त्याच्या आजच्या ८१ व्या वर्षातही तरूणांना प्रेरणा देणारं काम करतोय.

खरं तर लता मंगेशकर, सचिन तेंडुलकर आणि अमिताभ या तीन नावांनी उभ्या देशाला वेड लावलं. विसाव्या शतकाच्या आसमंतात व्यापुन राहिलेल्या या तिन्ही रत्नांनी आपापल्या जीवनातून भारतीय मुल्य परंपरांना जगाच्या क्षितिजावर दिमाखात सादर केलं. आपल्या सर्वांच्या जाणतेपणी आपल्याला यांची कारकीर्द अनुभवायला मिळाली, मिळते आहे हे आपलं भाग्यच.

लतादिदी गेल्या फेब्रुवारीत इहलोकातून गेल्या. सचिन आज पन्नाशीत आहे. अमिताभचा आज ८१ वा वाढदिवस! त्याच्या कर्तृत्वाला अभिवादन करताना मनात काही एक सुसूत्रता रहात नाही आहे. त्याच्या भुमिकांची कितीतरी रुपं, असंख्य प्रसंग, देहभान हरपून त्याचे सिनेमे पहाताना जागविलेल्या अनेक रात्री....त्याला अजुनही प्रत्यक्ष पहाता न आल्याने मनात राहिलेली खंत....ह्या गोष्टी झर्रकन समोरुन जातात.

त्याची गाणी मनाच्या पडद्यावर दृश्यमान होतात. कभी कभी मेरे दिल में... देखा एक ख्वाब... रिमझिम गिरे सावन... दो लफ्जो की हैं... अरे दिवानो... खायके पान बनारसवाला... परदेशिया... कितनी खुबसूरत ये तसवीर हैं... रोते हुवे आते हैं सब... रोते रोते हसना सिखो... जुम्मा चुम्मा दे दे... हम बंदे हैं... बुजुर्गोने...आज रपट... अशी असंख्य गाणी डोळ्यांसमोर पिंगा धरतात. अहो कितीतरी गाण्यांत आपण आपल्यालाच पहात असतो... अमिताभ आपलाच वाटतो.

समाजातील गरीबांना, परिस्थितीनं गांजलेल्यांना रुपेरी पडद्यावर का होईना प्रस्तुत समाजाविरुद्ध बंड करून उभा राहणारा आपल्यातलाच एक वाटणारा निर्भीड तरुण.. स्वातंत्र्याच्या तब्बल तीसेक वर्षांनंतरही अपेक्षित स्वातंत्र्य न मिळाल्याची ऐंशीच्या दशकातील नवयुवकांची भावना मांडणारा angry young man...

शहेनशाह... डॉन.... विजय दीनानाथ चौहान... जंजीर मधला इन्स्पेक्टर..... त्रिशूल मधला आपल्या आईवरील अन्यायाचा बदला घेण्यासाठी मोठ्या हिमतीनं परिस्थितीशी दोन हात करणारा पुत्र... दीवार मधला 'तुम मुझे ढूंढ रहे हो और मैं तुम्हारा यहा इंतजार कर रहा हूँ' म्हणत पेटून उठणारा बिल्ला नंबर 786 वाला कुली..... कभी कभी तला कवी आणि वडिलांच्या इच्छेसाठी आपलं प्रेम कुर्बान करणारा मुलगा... सिलसिला तला दोन्ही बाजूंनी नीती अनीतीच्या वेढ्यात गुरफटलेला प्रेमी, मित्र..... शोले तला जय..... नटवरलाल... नमक हलाल मधला ओम प्रकाशचा मुन्ना..... आनंद मधला बाबू मोशाय..... डॉन मधला बनारसी... शराबी मधला रोमँटीक शराबी.... ओ साथी रे ची आर्त हाक देणारा आतून तुटलेला प्रेमी..... मजबूर मधला भाऊ..... अंधा कानून, आखरी रास्ता मधला आपल्या पत्नीवरील अत्याचाराचा बदला घेणारा पती..... हम मधला थोरला सावत्र भाऊ टायगर. सरकार... पा... पिंक... झुंड मधली अमिताभची अशी असंख्य रुपं बघत आपण वाढलो आहोत, जगलो आहोत.

मला मंझिल मधला मरीन ड्राइव्हवर पावसात मौसमी चटर्जी बरोबर हातात हात घालून चालणारा अमिताभ... कसमें वादें मधला 'कसमे वादे निभायेंगे हम' म्हणणारा अमिताभ....नमक हलालमधला मिठाला जागणारा, स्मिता समोर ''मौसम-ए-इश्कमें मचले हुए अरमान हैं हम'' म्हणणारा अमिताभ आणि जंजीर मधला अमिताभ भारी आवडतो.

अमिताभच्या दुसऱ्या कारकिर्दीचाही त्याच्या समवयस्क अभिनेत्यांना आणि आता साठी-सत्तरीत असणाऱ्यांनाही प्रचंड हेवा वाटावा अशी त्याची धमक आहे. ब्लॅक, पा, चिनी कम, पिकू, पिंक अशा चाकोरी बाहेरच्या चित्रपटांतून तो आपल्या अभिनयाची ताकद एखाद्या विद्यार्थ्याला शोभेल अशा विनयानं अजमावत आहे. त्याच्या अभिनयानं आपल्या एका तरी चित्रपटाची एखादी चौकट उजळून निघावी असं या

38
DON
TRISHUL

जमान्यातील कुणाही दिग्दर्शकाला वाटत राहतं यातच त्याची या प्रांतातली राजप्रतिमा अधोरेखित होत असते. या वयातही हा कलावंत पिकू सारख्या चित्रपटातून कारकिर्दीतला चौथा राष्ट्रीय पुरस्कार पटकावतो हे पाहिल्यावर आपल्याला याची आकांक्षा किती असीम असेल याची कल्पना येते. नागराज च्या झुंड मधला फुटबॉल प्रशिक्षक अमिताभनं कुठल्या पातळीवर नेऊन ठेवलाय! या वयातही त्यानं न्यायालयातला एक लांब सीन एकही कट न घेता केलाय यावर आपल्यासारख्या सामान्यांचा विश्वास बसत नाही.

अमिताभचं काम असलेला कोणताही सिनेमा आपण पाहिलाच पाहिजे, ते एक धर्मकर्तव्यच आहे असं मानणारे करोडो चाहते आपल्या देशात आहेत...असं परमभाग्य लाभलेला जगातला एकमेव अभिनेता म्हणजे अमिताभ हरिवंशराय बच्चन!

आपल्या वडिलांच्या पिढीनं बेलबॉटमच्या फुल प्यांटी घातल्याचे फोटो आपण बरेचदा बघितले आहेत. तशी प्यांट आपल्या पिढीनं घातली नाही तरीही अमिताभच्या कित्तेक लकबी आपल्याही नकळत आपण बऱ्याचदा फॉलो केल्या आहेत...जरा आठवून पाहिलं तर लक्षात येईल आपल्या.

साऱ्या भारतीय चित्रपट सृष्टीचा brand ambessador म्हणूनच सारी दुनिया अमिताभला खुल्या दिलानं मान्यता देते. तब्बल पाच ते सहा दशकं रूपेरी पडद्याच्या या मोहमयी दुनियेत वावरताना आपलं चरीत्र, चारीत्र्य कुठल्याही ठपक्याशिवाय अबाधित ठेवणं ही या अखंड परिवर्तनशील अशा चित्रपटक्षेत्रात खुप मोठी गोष्ट आहे.

करोडो चाहत्यांच्या मनात घर करून राहणं, त्यांच्या अपेक्षांचं हरघडी वाढत जाणारं प्रचंड ओझं घेऊन आपला अभिनय अद्ययावत ठेवणं, आपली प्रतिमा जनमानसात निखळ ठेवणं हे सामर्थ्यशाली मनाचं द्योतक आहे. हे मानसिक सामर्थ्य अमिताभच्या ठायी आलं आहे त्याच्या कौटुंबिक संस्कारांतून. आई तेजी बच्चन यांच्या सामाजिक चळवळीत वावरणाऱ्या आणि आधुनिकतेकडे ओढा असणाऱ्या शिकवणुकीचा आणि वडील कवी हरीवंशराय यांच्या साहित्याशी जोडल्या गेलेल्या पिंडाचा अमिताभच्या जडणघडणीत मोलाचा वाटा आहे. आपल्या वडिलांची हिंदीतले ख्यातनाम कवी म्हणून असलेली प्रतिमा, त्यांची कवितेप्रतीची निष्ठा, त्यांच्या कवितेतून दृग्गोचर होणारी सकारात्मकता या सर्वांचा अमिताभच्या या प्रदीर्घ प्रवासात दीपस्तंभासारखा उपयोग झाला आहे असं म्हटलं तर वावगं ठरणार नाही.

हरिवंशरायांच्या ''कोशिश करने वालोंकी कभी हार नहीं होती लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती....'' अशा कवितांचं बाळकडू अमिताभला मिळालं होतं.

वृक्ष हो भले खडे
हो घने हो बडे
एक पत्र छाह भी
मांग मत मांग मत
अग्निपथ ! अग्निपथ !! अग्निपथ !!!

तु न थमेगा कभी
तु न रूकेगा कभी
तु न मुडेगा कभी
कर शपथ कर शपथ कर शपथ
अग्निपथ ! अग्निपथ !! अग्निपथ !!!

आपल्या ध्येयपथावर निश्चलतेनं चालण्याचं बळ आपल्या वडिलांच्याच अशा कवितांतून त्याला मिळालं असणार हे नक्की. अमिताभच्या चित्रपट आणि वैयक्तिक आयुष्यात आलेल्या मोठमोठ्या संकटांना मोठ्या धीरानं तोंड द्यायला याच संस्कारांची शिदोरी त्याच्या हाताशी होती. अमिताभची त्याच्या कामावर असलेली अद्वितीय निष्ठा, त्याचा वक्तशीरपणा, अखंड काम करत राहण्याची वृत्ती, पराकोटीची शारीरिक आणि मानसिक क्षमता या गोष्टी त्याच्या चित्रपट कारकीर्दीला अकलंकित ठेवण्यासाठी जशा उपयोगी ठरल्या त्याचबरोबरीनं त्याच्यावर आई-वडिलांनी केलेले संस्कारही.

त्यानं कुणालाही नावे न ठेवता प्राप्त परिस्थितीत आपल्या परिश्रमानं त्या त्या काळात आपली नाममुद्रा ज्या पद्धतीनं उमटवली ती पाहिल्यावर केशवसुतांच्या खालील ओळींना अमिताभनं किती सार्थ केलंय ते मनात येऊन जातं.

प्राप्त काळ हा विशाल भूदर
सुंदर लेणी तयात खोदा
निजनामे त्यावरती नोंदा
उगीच का वाढविता मेदा

वयाच्या ८१ व्या वर्षीही तरुणांना लाजवेल अशा कार्यक्षमतेनं कार्यरत राहण्याची त्याची वृत्ती, शिस्तशीर, वक्तशीरपणा... कुटूंब वत्सलता, सुसंस्कृतपणा, भारतीयतेचा आदर, जनसामान्याप्रती, आपल्या चाहत्यांप्रती आदरभावना.... अशा गुणसंपदेनं व्यापून गेलेलं हे भव्य व्यक्तिमत्त्व आपल्या साऱ्या भारतीयांना अभिमानास्पद आहे. त्याच्या चित्रपट कारकिर्दीला, कार्याला मानवंदना म्हणून दादासाहेब फाळके पुरस्कार प्रदान करुन आपल्या सर्वांचीच ईच्छा पूर्ण झाली आहे असं वाटतं.

अमिताभनं आपल्याला काय दिलं याचं एक उत्तर हे ही असू शकतं.... की त्यानं अफाट तरुणाईला एक passion दिली.... आशा दिली.... मोहमयी दुनियेत राहुनही उच्च मुल्ये पाळता येतात ही शिकवण दिली... अखंड परिश्रमाला पर्याय नसतो ही उक्ती बिंबवली... आपल्या चित्रपटांचा भारतीय आत्मा हरवू दिला नाही.

चित्रपटाच्या पडद्याच्या या अनभिषिक्त सम्राटाला, सहस्त्रकातील ताऱ्याला आणि भारतीय मानस जपणाऱ्या कलावंताला आपल्या सर्वांच्याकडून त्याच्या वाढदिवशी मनापासून शुभेच्छा देऊया. त्याच्या आगामी कलाकारकिर्दीसाठी त्याला दीर्घारोग्य लाभो आणि त्याच्या अभिनयानं सध्याच्या चित्रपटांना पुन्हा एकदा झळाळी येवो हीच सदिच्छा व्यक्त करूया.

मोहन निवृत्ती बागडे
सासवड, पुणे
११ ऑक्टोबर २०२३
९८८१७२०५१०

महाकुंभ – Mahakumbh

Every year, on the third Sunday of January, a unique pilgrimage unfolds on the streets of Mumbai. It isn't one of religious rites, but of rhythmic strides; not of chants, but of synchronized breaths. This is the Tata Mumbai Marathon (TMM), and this year, it coincided with the grand Mahakumbh of 2025, which also began in the 3rd week of January.

With over 60,000 runners across all categories woke before the sunrise in the city to participate in the biggest running event of the country. Just as millions gather at the confluence of the Ganges and Yamuna rivers to take a holy dip, every runner every runner aspires to experience the journey of running the Mumbai Marathon. For me, this was the 3rd participation in this grand event. The Tata Mumbai Marathon is more than just a race; it's a World Athletics Gold Label event, celebrated as one of Asia's largest marathons. Its route is a tourist's dream, starting from the iconic Chhatrapati Shivaji Maharaj Terminus (CSMT), sweeping past Marine Drive and Haji Ali, and then taking you across the majestic Bandra-Worli Sea Link. Pedestrians are allowed to walk, run, take selfies on the Sea link only on the event day.

Just like the order of bathing in the Mahakumbh Royal Bath (also known as Shahee Snaan), where Naga Sadhus bathe first, followed by other religious orders and the general public, the Mumbai marathon also has a running order. Elite runners enter the corral first, followed by faster runners and then amateur runners like me. Runners are assigned to different line-up sections (from A to E) based on their previous race timings to better manage the crowd. I was allotted line-up section A, having submitted my strong finish time from the Delhi Half Marathon.

My journey into the world of long-distance running began on the college grounds of Kolkata in 2017. Though I had been involved in sports since childhood, my tenure as the captain of the college athletics team exposed me to the vast spectrum of running. Many see running as a single activity, but its disciplines are incredibly diverse, from the explosive power of track events like the 100m, 400m, and 800m sprints, to the strategic blend of speed and stamina in the 1500m, 5000m, and 10,000m races. Then come the endurance distances: half marathon (21k), full marathon (42k), ultra runs (>42k), stadium runs (12hr, 24hr, 36hr etc), and trail runs through natural terrain like forests and mountains.

This 2025 edition was special. I completed the entire stretch of 42km without taking a halt. In previous editions, I had suffered from irritable bowel syndrome due to poor diet or incomplete sleep before the race. This time, I focussed on my diet and simulated the race day nutrition strategies in my training plans, specially in my long runs.

On race morning, I ate a banana half an hour before the flag-off and I was standing afresh at the starting line. As the race began, I executed my plan. For the first 15 kilometres, I focused on sipping water and electrolytes, staying ahead of dehydration.

My energy was stable, thanks to the two energy gels I carried and a few more I grabbed from the aid stations enroute. The Mumbai crowd also played a vital role in my strong finish. They are a different breed of supporters-offering everything from salted oranges and biscuits to singing, dancing, and holding up the most hilarious signs.

They make you feel like a superstar. Buoyed by this energy, I achieved a personal milestone: I ran the entire distance without a single break, not even for nature's call. Crossing the finish line and seeing the clock stop at 4 hours and 5 minutes was a moment of pure joy. This joy was not just about the timing but about a healthy and strong finish. Despite the

challenges, I had shaved another 13 minutes off my previous TMM timing. The very first time I participated in TMM in 2020 and clocked 4 hours 32 minutes and then in 2024 again, I improved it to 4 hours and 18 minutes. The feeling was amplified by meeting my friends from the running community who have travelled to Mumbai from all over India.

I would like to mention one of TMM's most beautiful initiatives. Every full marathon finisher is given two medals. The first is for the runner, a symbol of their grit. The second, engraved with the words "Inspiration," is for them to give to the person who inspired their journey. Holding that second medal, I felt the true spirit of the event—it's not just about personal achievement, but about shared strength and gratitude.

For anyone inspired to start their own running journey, my advice is simple:

Start with slow progression. Don't rush into long distances. Begin with walking, then graduate to a walk-run mix, and slowly build your mileage. Your body needs time to adapt.

Always listen to your body. It is the best coach you will ever have. It will tell you when to push and when to rest.

In the great Runner's Mahakumbh of Mumbai, I completed my royal bath by running the full marathon along the beautiful route via Bandra-Worli Sea Link, Haji Ali, and CSMT.

Mr. Naman Kumar
ERL

Turning the lenses, framing the moments...!!!

1. A WEAVER WORKS ON A HANDLOOM, CREATING A VIBRANT TEXTILE.

The photo captures an individual, a weaver, engrossed in their craft ("Tant Silpa"). The weaver is seated at a handloom, which occupies the majority of the frame. The loom is a complex arrangement of wooden frames, threads, and mechanisms. A striking feature is the array of colourful threads, particularly bright yellow and blue, that are stretched vertically and horizontally, creating a web-like appearance. The threads in the foreground are a brilliant magenta and purple, forming a partially completed textile. The weaver, seen in the background with a blurred effect suggesting motion, is focused on their work. They appear to be shirtless and wearing glasses. A single lightbulb hangs above the loom, illuminating the workspace. The background wall is a faded teal colour, and a white garment hangs on the right side of the frame. The overall atmosphere is one of focused labour and traditional craftsmanship.

2. PRIESTS PERFORMING THE SACRED GANGA AARTI ON THE ASSI GHAT OF VARANASI.

The photo captures the dramatic and spiritual Ganga Aarti in Benaras formally known as Varanasi, a Hindu ritual of worship. In the foreground, a line of priests are seen kneeling on a raised platform, each performing a synchronized offering. They are dressed in vibrant saffron and gold robes. The main subject, a priest in the front, is holding a large, ornate metal lamp, from

which a plume of white smoke rises, catching the light and creating a dynamic effect. The atmosphere is mystical, with the scene lit by a combination of artificial lights from the ceremony and the glowing lamps held by the priests. The background is a crowd of onlookers sitting and standing, their faces partially illuminated by the lights. The dark night sky and the water (Ganges River) are barely visible on the far left, adding to the nighttime, ceremonial ambiance. The image is a powerful depiction of a religious tradition.

3. PIGEONS SOAR OVER THE GANGES RIVER, AS BOATS REST ON THE GHATS OF VARANASI ON A CLOUDY DAY.

This monochrome captures a wide, expansive view of the Ganges in Varanasi. The sky is dramatic, filled with thick, textured clouds that give the monochrome a moody and atmospheric feel. A large flock of birds, likely pigeons, is in flight, their silhouettes creating a dynamic pattern across the sky and water. In the foreground and middle ground, several traditional boats are moored, some of them empty and others carrying people. On the right side of the frame, the steps are leading to the holy river, where a few people

are standing and sitting, observing the scene. The monochrome palette emphasizes the textures and contrasts of the scene—the ripples on the water, the details of the boats, and the contours of the clouds.

Mr. Debjyoti Bandyopadhyay

EDL

Culture of integrity for nation's prosperity

A culture of integrity encompasses values such as honesty, transparency, accountability, and ethical behaviour, which collectively contribute to national prosperity. Fostering a culture of integrity can lead to improved governance, enhanced economic performance, stronger social cohesion, and an overall better quality of life for citizens.

At the heart of any thriving nation is an effective governance structure that commands the trust of its citizens. When leaders and institutions operate with integrity, transparency, and accountability, citizens are more likely to engage positively with their leaders and participate in civic processes. This trust translates to political stability, which is crucial for national prosperity. Conversely, corruption, which breeds a culture of dishonesty, can derail even the most promising economies. Countries with high levels of corruption often experience poor governance, resulting in wasted resources and diminished public services. For instance, nations like Denmark and New Zealand, which consistently rank high on transparency and corruption indices, also showcase remarkable governance systems that contribute to their high levels of prosperity.

Integrity promotes fair competition, innovation, and the efficient allocation of resources. Businesses rooted in ethical practices attract investment, stimulate growth, and create jobs. Investors are more inclined to channel funds into economies where they trust that the rules of the game are followed and that their investments are protected from corrupt practices. Moreover, nations that prioritize integrity often see the emergence of robust institutions that foster entrepreneurship and facilitate trade.

For instance, countries like Singapore have leveraged their commitment to integrity into a successful economy that thrives on global trade and investment. On the flip side, corruption can stifle economic growth. It often leads to misallocation of resources, where funds are diverted to bribes and kickbacks rather than infrastructure and social services.

A culture of integrity fosters social cohesion by promoting shared values and mutual respect among citizens. When individuals and institutions operate within an ethical framework, they contribute to a sense of community and belonging. This ethical foundation encourages civic responsibility, where citizens feel empowered to engage in societal issues, advocate for their rights, and hold leaders accountable. Social cohesion is essential for maintaining peace and stability, as well as for fostering a collaborative environment where diverse groups can work together towards common goals.

Finally, the overarching impact of a culture of integrity on national prosperity is seen in the improved quality of life for its citizens. Access to quality healthcare, education, and social services is contingent upon the effective functioning of government and the ethical practices of both public officials and private enterprises.

A culture of integrity is fundamental to national prosperity. By embracing values of ethical conduct, transparency, accountability, and mutual respect, nations can build trust in governance, stimulate economic performance, nurture social cohesion, and elevate the quality of life for their citizens.

So, I would like to conclude it with saying "Our deeds determine us, as much as we determine our deeds."

Ms. Neeta Kulkarni

HRMA

Defying limits: my journey through the Pune off-road expedition 2025

The Pune Offroad Expedition 2025, organized by 8 Moto India, was held on August 16-17, 2025, in Panshet, Maharashtra, at the Panshet Backwaters. This annual event is a celebration of off-road adventures for both dirt bikes and 4x4 vehicles, inviting participants to ride, drive, and camp in the Sahyadri mountains.

When you think of hardcore off-roading, names like the Hero Xpulse, Royal Enfield Himalayan, KTM 390 Adventure, or BMW GS310 come to mind. But I showed up with something different—my trusty TVS Apache 200 BS4. On paper, it wasn't the ideal machine for the terrain we were about to face. But passion doesn't read spec sheets.

The Pune Off-Road Expedition 2025, organized by 8moto on August 16–17, was a test of grit, machine, and mindset. I wasn't going to let my bike's limitations hold me back. I prepped it like a warrior—swapping in Apollo Tramplr XR tyres for better grip, removing the front and rear mudguards to prevent slush buildup, and installing a custom-fabricated bash plate to shield the engine during river crossings and rocky scrambles. It wasn't just a bike anymore—it was my battle companion.

As I lined up at the start line at 9:30 AM, surrounded by riders on purpose-built machines, I felt a cocktail of emotions—nervousness, excitement, and raw adrenaline. I had some off-road experience and basic training under my belt, but this was a whole new beast.

Over the next two days, we climbed unforgiving mountains, crossed gushing rivers, waded through axle-deep slush, and danced over jagged rocks. The trail didn't just challenge our bikes—it tested our willpower. Five bikes suffered major breakdowns. Two chassis snapped clean in half. One rider had to be evacuated in an ambulance. The terrain was merciless.

A story of my Participation in Pune Off-road Expedition 2025, Organized by 8moto 16-17 August 2025.

Adventure Maval, Panshet, Pune

https://maps.app.goo.gl/wFHVqSTG53CoJ72a6

My TVS Apache 200 with mud on front tyre

Climbing vertical hill with rocks and mud

Water crossing in above knee level water with 0 traction

But through it all, my Apache and I held our ground. I learned to trust my instincts, read the trail, and push past fear. Every obstacle conquered was a lesson in resilience. Every slip and recovery was a reminder of why I ride.

By the end of the expedition, I had earned something far more valuable than a medal—I had gained a new respect for my machine and a deeper belief in myself. The TVS Apache 200 BS4 may not be built for off-road glory, but with the right mindset and a few smart mods, it proved it could go toe-to-toe with the best.

This wasn't just a ride. It was a revelation. There is a very famous quote in motorcycling "It's not about the bike, it's about the ruder riding it"

Full Video on my Youtube channel Shubhaybuilds **https://youtu.be/105d97H2QTo?si=a7VLYSxlwgSfzxr4**

Certificate of completing the off-road expedition

Mr. Shubhay M. Dongare
Academy

डोंगरातील मुलींचा धडा (Lesson from the Mountain Girls)

आज मी नेहमीप्रमाणे निसर्गाचा आनंद लुटण्यासाठी टेमघर धरण, लवासा सिटी, ताम्हिणी घाट या परिसरात फिरण्यासाठी गेलो होतो.

आम्ही खूप मजा करत फोटो काढत होतो आणि निसर्गाचा आनंद लुटनायत दंगहोतो. पण आम्ही फिरत असताना 3 छोट्या मुली डोंगर दऱ्यात फिरत होत्या साधारण 6yrs, 5yrs, 3yrs या वयाच्या असतील. मी आपुलकीने चौंकशी केली आणि विचारलं की तुम्ही काय एवढ्या घनदाट जंगलात डोंगरात का आलात त्यांनी मला सांगितलं की आम्ही करवंदाची फळे घायला आलो त आणि आम्ही ते खाली धरणाच्या पायथाला नेऊन विकणे आणि आमचा उदरनिर्वाह करतो.

साधारण दररोज आम्ही 10km,15km चा प्रवास करून वरती डोंगरावर येतो आणि पुन्हा खाली 10 km to 15 km खाली यायचं.

माझं मन हळहळल आणि मी त्यांना विचारलं की तुम्ही शाळेत नाही का जात मला उत्तर दिलं त्यांनी की नाही जात मग मी कुटुंबा विषया विचारलं असता त्या म्हणाल्या की आम्ही एकूण ५ बहिणी तिघी डोंगरावर जातो रान मेवा आणायचा विकायचा आणि घरात दोघी बहिणी आणि आई आहे वडील जिवंत आहेत पण आमंच खूप छळ आणि मारहाण करून ते निघून गेले आहेत आता आम्ही ५ बहिणी आणि आई एवढेच राहतो. मी लगेच विचारलं त्याना की तुम्ही काही खाल्लं आहे का त्यानी मला उत्तर दिलं नाही मी लगेचच माझ्या जवलली बिस्कीट आणि पापड्या त्याना खायला दिल्या आणि त्यांच्या चेहऱ्यावर हसू उमटला आणि माझ्या मनाला वेगळाच समाधान लाभलं.

एक गोष्ट मनाला चटका लावून गेली ती म्हणजे की या पाचही मुली लवरडे गाव अगदी पुणे शहरापासून 80Km अंतरावर पण ही अवस्था या मुलीची ना कुठली मूलभूत सुविधा, शिक्षण, वीज, आजकालच्या जमान्यातील मोबाईल फोन.

मला आणखी अस वाटलं की या मुलीचा का नाही कोणी काढलं फोटो त्या मुली खऱ्या अर्थाने निसर्गाचं सवरक्षण करतात याच्याकडे पाहून अस वाटलं की आपलं जीवन किती समृद्ध आहे पण तरी पण आपण रडत बसतो आणि या तीन मुली कशालाही ना जुमानता या किती आनंदाने त्या करवंदाची फळे विकत होत्या आणि यांच्याकडून खरच किती शिकण्यासारखे आहे हे मला या मुलीनी शिकवलं।

आम्ही त्या ३ मुलीबरोबर फोटो काढला आणि त्या मुली हसल्या आणि परत करवंदाची फळे विकायला निघून गेल्या!

श्री. धीरज दीपक नागाने

एईडी–एचटीसी

Beware before driving your car!

Please keep open the doors or windows for a while; before / after you get into your car and don't turn on Air Conditioning (AC) immediately.

According to a research, the car dashboard, sofa and freshener will emit Benzene, a cancer-causing toxin (Carcinogen - Take a note of the heated plastic smell in your car)

In addition to causing cancer, it poisons your bones, causes anaemia and reduces white blood cells. Prolonged exposure will cause Leukaemia, increasing the risk of cancer. It may also cause miscarriage.

Acceptable Benzene level indoors is 50 mg. per sq. ft. A car parked indoors with the windows closed will

contain 400-8000 mg. of Benzene. If parked outdoors under the sun at a temperature above 60-degree F, the Benzene level goes up to 2000 – 4000 mg. i.e. 40 times of the acceptable level. The people inside the car will inevitably inhale an excess amount of the toxin.

It is recommended that you open the windows and doors to give time for the interior to air out before you enter. Benzene is toxin that affects your kidney and liver, which is very difficult for your body to expel this toxic stuff.

Mr. S. C. Nikam
PSL

The ultimate temple run: a family road trip from Pune to the heart of India's spiritual sanctuaries (2200 KM in the Kia Seltos Red)

The open road calls, and for this adventure, my trusty Kia Seltos Red was the perfect companion! Embarking on a 2200-kilometer journey for 6 days through the heart of Southern India, the route was meticulously planned: Pune, Solapur, Hyderabad, Srisailam, Tirupati, Belgaum, Kolhapur, and finally, back to Pune. This wasn't just a drive; it was an exploration of diverse landscapes, ancient history, spiritual sanctuaries, and vibrant culture.

Phase 1: The Gateway to the South (Pune - Solapur - Hyderabad)

Our journey began in Pune, heading east towards Solapur, a city renowned for its textile industry. The roads were smooth, allowing the Seltos to cruise effortlessly, setting the tone for the adventure ahead. The excitement built with every kilometre, knowing that Hyderabad, the "City of Pearls," awaited.

Reaching Hyderabad was a transition into a city that beautifully blends its glorious past with a bustling present. The Nizami heritage is palpable in its architecture and cuisine. As night fell, the city transformed, and the view was absolutely breath-taking.

The illuminated palaces and the serene Hussain Sagar Lake, with the Buddha statue glowing in the distance, offered a spectacle of grandeur and peace. This mesmerizing night view truly captured the essence of Hyderabad's majestic charm.

Phase 2: Spiritual Trails and Scenic Drives (Hyderabad - Srisailam - Tirupati)

Leaving the urban sprawl of Hyderabad, the landscape gradually shifted. The route towards Srisailam, home to one of the twelve Jyotirlinga shrines of Lord Shiva, was incredibly scenic. The roads wound through lush

forests and rolling hills, a testament to India's diverse topography.

The drive itself was an experience, with wide, well-

maintained highways carving a path through picturesque terrain. The Seltos handled the varied gradients with ease, proving its mettle on both city streets and winding mountain passes. The anticipation of reaching the ancient temple town, nestled amidst the Nallamala Forest, added to the thrill.

Srisailam's spiritual aura was profound, a stark contrast to the city's hustle. From there, our journey continued south towards Tirupati, another significant pilgrimage site. The path was dotted with charming villages and vibrant green fields, each turn revealing a new facet of the Indian countryside.

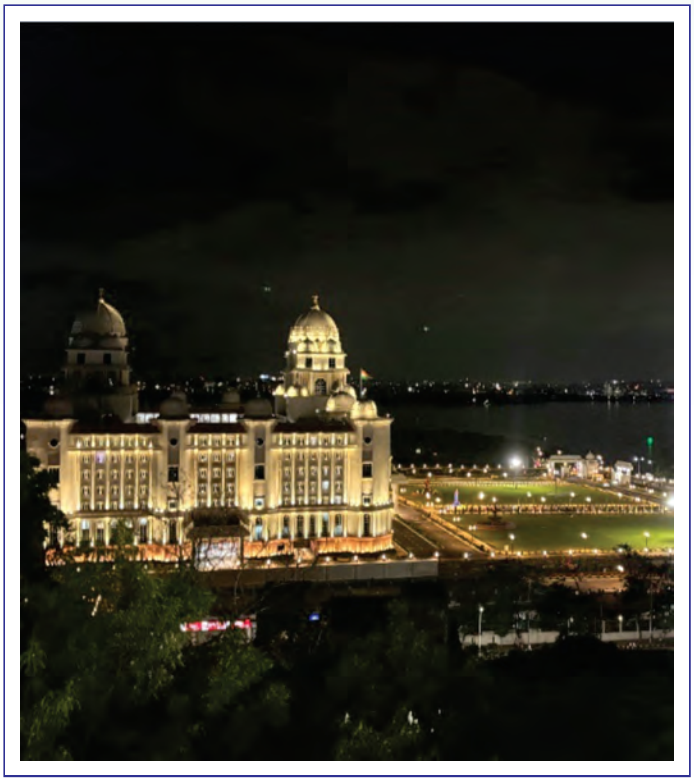

Phase 3: Wildlife Encounters and Dam Views

Beyond the spiritual, our trip also brought us closer to nature. A highlight was an encounter with one of nature's most magnificent creatures.

The majestic white tiger, with its piercing gaze and regal bearing, was a sight to behold, a powerful reminder of the incredible wildlife that coexists in this diverse land.

The journey also led us to impressive feats of engineering.

Standing beside a massive dam, with water gushing over its walls, was an exhilarating experience. The sheer force of the water and the engineering marvel of the dam were awe-inspiring. It was a perfect moment to capture a memory, enjoying the cool spray and the magnificent view. The Seltos, parked neatly, looked ready for its next adventure, just like me!

Phase 4: The Homeward Stretch (Belgaum - Kolhapur - Pune)

The final leg of our journey took us through Belgaum and Kolhapur, each city with its unique historical and cultural significance. The roads remained excellent, making the drive enjoyable even as the trip neared its end. The Seltos, with its comfortable interiors and smooth performance, made the long distances feel shorter.

Conclusion:

2200 kilometers, countless memories, and an unforgettable experience – this road trip through Southern India was everything I hoped for and more. From the grandeur of Hyderabad to the spiritual serenity of Srisailam and Tirupati, the diverse landscapes, and the incredible encounters, every moment was a discovery. My Kia Seltos Red was not just a vehicle; it was an integral part of this incredible adventure, carrying me safely and comfortably through every twist and turn.

The Sweet Spot of Comfort and Cost-Effectiveness

Cost-Effectiveness:

1. Fuel Efficiency: Your Kia Seltos, depending on the model (petrol/diesel, engine size), offers decent fuel efficiency. For a 2200 km trip, while fuel is a significant expense, it's often more economical than multiple air tickets for a group or family. You pay for the fuel consumed, not per person.

2. Group/Family Travel: This is where road trips truly shine. The cost of fuel and tolls is split among all passengers, drastically reducing the per-person cost compared to individual train or flight tickets.

3. No Hidden Charges: Unlike air travel with baggage fees, seat selection charges, and airport transfer costs, a road trip has predictable expenses: fuel, tolls, and maintenance checks (which you'd do anyway).

4. Food Flexibility: You can carry your own snacks and drinks, stopping at dhabas or local eateries for more affordable meals, avoiding expensive airport or train station food.

5. Accommodation Choices: While not directly tied to the vehicle, road trips offer the flexibility to choose more budget-friendly accommodations further from city centers, which might be less accessible by public transport.

Comfort:

1. Door-to-Door Convenience: No lugging bags through airports or train stations. You pack your Seltos, and you're off, arriving directly at your destination's doorstep.

2. Personal Space: The Seltos offers ample legroom and seating comfort compared to often cramped train compartments or airplane seats. You have your personal bubble for the entire journey.

3. Flexibility and Freedom: This is perhaps the biggest comfort factor. You control your schedule. Want to stop for a scenic photo (like your stunning highway shot!), grab a local delicacy, or just stretch your legs? You can! No rigid timetables.

4. Luggage Capacity: The Seltos has a generous boot space, meaning you can pack more comfortably without worrying about airline baggage limits or the hassle of managing multiple bags on a train.

5. Music & Entertainment: Curate your own playlist, listen to podcasts, or enjoy conversations without disturbing others. Your in-car entertainment system is entirely yours.

Mr. Rupesh Wani
ID Dept

संकल्पपूर्ती

वर्ष २०२० ह्या वर्षाची सुरुवातही मस्त धुमधामीत झाली. नवे वर्ष, नवी स्वप्न! पण अचानक मार्च महिन्यात ह्या सगळ्या नव्या गोष्टींवर करोना नावाचं वादळ येऊन धडकलं आणि जगभर भयाण शांतता पसरली. सगळ्या उत्साहावर मरगळीने साम्राज्य उभं करायला सुरुवात केली. पाहता पाहता लॉक डाउन सारख्या नव्या शब्दाचा जीवनात प्रवेश झाला. सुरुवातीला मोठ्ठी सुट्टी ह्याचा आनंद, नवीन आव्हानं घेत बागकाम, कूकिंग चे प्रयोग, पेन्टिंग ह्या सगळ्या नव कल्पनांनी भरारी घेतली. नवनवीन 'challanges' नि समाजमाध्यमां वर नुसता धुमाकूळ घातला. आम्हीही त्या आव्हानांचा आनंद घेतला.

हळू हळू नवीन पिढीने आलेलं नवं वादळ झेलत नव्या Virtual बदलांना स्वीकारत काम सुरु केलं. पण घरातल्या ह्या सक्तीच्या सुट्टीला कळत नकळत सगळेच वैतागले होते. अशातच एक दिवस आमच्या मैत्रिणींच्या समुहावर ''मुलींनो शिवतांडव शिकणार का?'' असा मैत्रिणीचा निरोप वाचला आणि जणू नवा खजिना सापडावा तसं आम्ही ''हो, चालेल की!'' म्हणून लगेच तयार झालो. हे शिवतांडव काय आहे ह्याची तसूभर कल्पना नसताना नवा उत्साह मात्र होता.

एका मैत्रिणीने लगेच प्रिंटाऊट्स काढून आणल्या. आपला क्लास आजपासून सुरु होईल बर का गं! अशी सूचनाही दिली. क्लासच्या आधी समजलं की मी एकटीच वेगळ्या ग्रुप मध्ये आणि बाकीच्या वेगळ्या ग्रुप मध्ये. झालं! माझं अर्ध अवसान गळालं. आता मला कसं काय जमणार म्हणत घाबरतच, आलेल्या गुगल मीट च्या लिंक वर जॉईन झाले. नवीन वर्ग, नव्या मैत्रिणी आणि नवे शिक्षक अगदी तसंच वाटत होतं !

स्वतःची ओळख करून देत सुरुवातीचा वेळ संपला. आपण अभ्यास कसा करणार आहोत ह्याची कल्पना देत शिकवायला सुरुवात झाली. रोज ४/५ , ४/५ श्लोकांचा अभ्यास करत आठवडाभरात १४ श्लोक शिकून झाले पण! आपल्या मृदू आवाजात, सहज, सोप्प्या पद्धतीने माधुरी ताईंकडून खूप छान शिकायला मिळालं!

आपल्या देशातील शैक्षणिक संस्थांमधून शैक्षणिक दर्जा उंचावण्यासाठी तसेच समाजात अध्यात्मिक उन्नती घडून यावी म्हणून राष्ट्रीय पातळीवर प्रचंड प्रमाणात FHDAF (फाऊंडेशन फॉर होलिस्टिक डेव्हलपमेंट इन ॲकेडेमिक फिल्ड) या

संस्थेमार्फत सौ. माधुरीताई अनिल सहस्रबुद्धे अतिशय मोलाचं काम करत आहेत. या शिवतांडव स्त्रोत शिकण्याच्या निमित्तानं आदरणीय माधुरी ताईंच्या अद्वितीय कार्याचा परिचय झाला.

इथंच थोडी 'शिवतांडव' स्त्रोताबद्दल माहिती देणं अपेक्षित होईल असं वाटतं. शिवताण्डवस्तोत्र, हे शिवाच्या सामर्थ्याचे आणि सौंदर्याचे वर्णन करणारे संस्कृत स्तोत्र आहे. याचे श्रेय पारंपारिकपणे लंकेचा राजा रावण याला दिले जाते, जो शिवाचा महान भक्त मानला जातो. असे मानले जाते की रावणाने शिवाची स्तुती करण्यासाठी आणि मोक्षाची याचना करण्यासाठी हे स्तोत्र रचले होते.

पौराणिक कथांमध्ये अशी मान्यता आहे की, रावणाने संपूर्ण कैलास पर्वत उचलला आणि लंकेला घेऊन चालला होता, तेव्हा त्याला त्याच्या शक्तीवर अहंकार झाला.

शंकरांना त्याचा हा अहंकार नष्ट करायचा होता, म्हणून त्यांनी अंगठ्याने दाब दिला व पर्वत आहे त्या जागी पुन्हा स्थापित झाला. यामुळे रावणाचा हात पर्वताखाली दाबला गेला आणि त्याचा मनातील अहंकार गळून मनात शिवभक्तीचा अंतर्नाद घुमला ''शंकर शंकर''– अर्थात क्षमा मागून स्तुती करू लागला. हीच स्तुती म्हणजे शिवतांडव स्तोत्र. ह्या शिवतांडव स्तोत्राने भगवान शंकर एवढे प्रसन्न झाले की त्यांनी रावणाला सकळ समृद्धी असणारी लंकाच नव्हे तर ज्ञान, विज्ञान तसेच अमरत्व वरदानरूपात दिले.

आता नवा आठवडा, नवीन ग्रुप, नवीन ताई. श्लोक शिकल्यानंतर संगीत शिकायला माहेश्वरी ताई च्या ग्रुप मध्ये पहिल्याच दिवशी चाल शिकताना कडक शिस्त पाळावी लागणार ह्याचा अनुभव आला! ताई कडून आम्ही सगळ्या आता लीड म्हणून काम करायला पात्र झाले आहोत आणि ताई कडून संगीत शिकणार आहोत हे समजल्या वर मस्त वाटलं.

ताई चा स्वतःचा उत्तम अभ्यास असल्याचा अनुभव पहिल्याच दिवशी आला पण काही अपरिहार्य कारणामुळे २ दिवसानंतर मी हा वर्ग पूर्ण करू शकले नाही.

त्यामुळे आता माधवी ताईंकडे पुन्हा नव्या वर्गात श्लोक आणि संगीत दोन्हीचा अभ्यास सुरु झाला. प्रत्येकजण खूप अभ्यासपूर्ण शिकवत होत्या. आठवडा भर पुन्हा एकदा अभ्यास करून माहेश्वरी ताई कडे माझी रवानगी झाली. आठवडाभर संगीताचा अभ्यास करताना आतापर्यंत सगळ्याच जणी किती अभ्यासपूर्ण शिकवत होत्या ह्याचा प्रत्यय पदोपदी येत गेला.

एक गोष्ट मात्र इथे आवर्जून शिकण्यासारखी होती सगळ्या महिला महिलांसाठी एकत्रितपणे काम करत होत्या. अतिशय शिस्तबद्ध आणि अभ्यासपूर्ण पद्धतीने!

आता माझा प्रवास सुरु झाला तो लीड म्हणून! शिकवताना संयम, भाषा प्रभुत्व सगळ्याचा कस लागत होता. आता खरी गम्मत होती. शिकणं सोप्पं वाटावा अशी गम्मत येत होती. मराठी भाषिक असल्याने ओघानं येणारी मराठी भाषा, त्यात आता हिंदी बोलावं लागत होतं. सर्वसमावेशक म्हणून हिंदी चा आवर्जून प्रयोग करण्याच्या सूचना होत्या. सुरुवातीला फक्त श्लोक शिकवत हळूहळू संगीत शिकवण्यासाठी काम सुरु झालं.

नवनवीन जबाबदारी घेत असताना आपण स्वतः पण किती तरी नवीन गोष्टी शिकत असतो हे पुन्हा एकदा जाणवलं. माझा हिंदी बोलण्याचा सराव होत होता. कर्नाटक ते कानपुर असा माझा प्रवास ींळ्ऑीरिश्रश्रू होत होता. माझ्यापेक्षा वयाने लहान मोठ्या सगळ्यांना शिकवतानाचा आनंद खूप वेगळा होता! डॉक्टर, खखढ मधील ताई, संगीत विशारद ताई !! प्रत्येक आठवड्याला नव्या ओळखी. आजूबाजूला असणारी करोना च्या वादळाची मरगळ आता कुठल्या कुठे गायब झाली होती.

एका शिस्तबद्ध प्रवासात आपण स्वतः प्रगल्भ होण्याचा अनुभव म्हणजे शिवतांडव! भारतभरातून भेटणाऱ्या मैत्रिणी त्यांना आपण शिकवतो ह्यापेक्षा त्यांच्या कडून आपणही किती तरी नवीन गोष्टी शिकतो हा आनंदही मोठा होता.

संवादाचा नवा Virtual अनुभव खूपच अनोखा होता! ह्यामध्ये आणखी एक गोष्ट मला खूप सकारात्मक वाटली. वयाचं कोणतंही बंधन इथे नव्हतं. ३ वर्षाच्या मुलापासून ७५-८० वर्षांच्या काकूंपर्यंत सगळ्यांना एकच वेड होत... शिवतांडव शिकणं ! मोठ्यांच्या बरोबरीनं आता लहान मंडळी पण त्यांच्याच वयाच्या मुलांकडून शिवतांडव शिकत होती.

बालवाडी ते पदवी जसे अभ्यासपूर्ण टप्पे असतात तसेच टप्पे इथेही होते. त्यामुळे शिकतानाची अन शिकवतानाची मजा अनुभवता आली. कळत नकळत प्रत्येक आठवड्याला नव्या मैत्रिणींशी संवाद घडत होता आणि आमचे पण एक मैत्रीपूर्ण नातं तयार होत होतं!

ह्याच शिवतांडव समापनाचा कार्यक्रम ८ मार्च रोजी वाराणसीतल्या अस्सी घाट येथे करण्याचा मानस होता. परंतु २०२१ मध्ये कोरोनाचं वादळ शमतंय असं वाटत असतानाच अचानक पुन्हा एकदा करोना तांडव सुरु झालं. आणि आता १००० सख्यांनी पाहिलेल्या ह्या स्वप्नाचं काय होणार असं वाटत असतानाच योग्य ती खबरदारी घेऊन वाराणसीचं हे स्वप्न पूर्ण करण्याचं नक्की झालं!

८ मार्च २०२१ महिला दिन एका वेगळ्या स्वप्नाच्या पूर्णत्वाकडे आणि मातृशक्ती च्या आगळ्या वेगळ्या प्रदर्शनाने साजरा होणं ही आमच्यासाठी खूप अभिमानाची आणि कायम स्मरणात राहणारी गोष्ट आहे. संध्याकाळी ६.३० वाजता वाराणसीत गंगा नदीच्या काठी अस्सी घाटावर शिवतांडव समापनाचा तो क्षण आला. आणि त्या वेळी हातात घेतलेले दिवे गंगा नदीमध्ये समर्पित करताना प्रत्येकीच्या चेहऱ्यावरचं समाधान अश्रूंच्या रूपानं बाहेर पडत होतं.

हाच तो क्षण ज्यासाठी प्रत्येकीने १ वर्ष वाट पाहिली होती.

संयम, संवाद, साधनांचा वापर (गूगल मीट)
शिवतांडव ने शिकवली नवी त्रिसूत्री !
भारतभरातून भेटल्या सख्या
जमली नवी गट्टी !
आत्मविश्वासपूर्ण वाटचाल करीत
शिकली न शिकवत गेली !
गृहिणी असो वा कमावती ती
सहजपणे इथे गेली सामावली !
हीच तर शक्ती शिवतत्वाची, मातृशक्तीची !
अनऋ समापन समाधानाची, आनंदाची

आजुबाजूला सगळीकडे करोनाचं नैराश्य असताना मानसिक बळ, समाधान दिलेल्या शिवतांडव स्तोत्राची समापन कथा. ज्याच्या समापना साठी काशीला जाताना सोबत होती आमची कन्या आणि पती नितीन सिन्नरकर ह्यांनी ''सगळं छान होणार निश्चिंत जाऊन या दोघी माय लेकी!'' ह्या शब्दांनी दिलेला मोठा विश्वास.

सौ. आरती अलबूर-सिन्नरकर

Trek to Girnar Hills

Adventure seekers from the EDL department organized an exciting trek to Girnar Hills in Gujarat from January 10 to 13, 2025. All six members completed the challenging journey successfully, showcasing teamwork and a love for exploration.

चहाच्या कपातून उभं राहिलेलं नातं HTC ARAI पासून लोणावळ्यापर्यंत

कधी कधी सगळ्यात छान गप्पा मिटिंग रूमच्या बाहेर, कॉम्प्युटरपासून थोडं दूर बसून होतात. अशीच आमची लोणावळ्याची छोटी सहल होती. कामाच्या डेडलाईन, टेस्ट शेड्युल आणि ई-मेलपासून थोडा ब्रेक घेऊन अठअख मधल्या वेगवेगळ्या फंक्शनमधील सहकाऱ्यांसोबत निवांत वेळ घालवण्याची एक सुंदर संधी बसमध्ये येता-जाता कायम मजा मस्ती आम्ही करतच असतो. काही वेळा मुकाई चौकच्या आसपास चहा प्यायला थांबणं हे आमचं ठरलेलं असतं. आठवड्यातून किंवा महिन्यातून एकदा तिथे चहासाठी जमा होत असतो. चहा पिता पिता एक दिवस सगळे मिळून कुठेतरी बाहेर जावं, निवांत वेळ घालवावा असं सुचलं आणि यावेळी आम्ही तो विचार खऱ्या अर्थाने अंमलात आणला. एक दिवस ऑफिसच्या गोष्टींपासून दूर राहून, मनसोक्त मजा करण्यासाठी आम्ही लोणावळ्याला छोटी सहल आखली.

त्याकरिता टेम्पो ट्रॅव्हलर बस बुक केली. सकाळी लवकर सगळेजण ट्रॅव्हलर बसमध्ये जमा झालो. प्रवासाच्या सुरुवातीला चेहरे थोडे झोपलेले होते पण थोड्याच वेळात वातावरण ऑफिस मोड मधून पिकनिक मोड मध्ये गेलं. पुढच्या सीटवर गाण्यांची निवड सुरू झाली, कुणी जुन्या प्रोजेक्टमधल्या मजेशीर आठवणी सांगू लागलं, आणि थोड्याच वेळात सगळीकडे हशा आणि गप्पांचा माहोल झाला. जे सहकारी नेहमी फक्त मिटिंग्समध्ये भेटतात, ते आता

आवडते पदार्थ, मसाले आणि कुटुंबाबद्दल मनमोकळेपणाने बोलत होते. रस्त्यात आम्ही हायवेवर चहा–नाश्त्यासाठी थांबलो. बससमोर सगळ्यांनी एका रांगेत उभं राहून गट फोटो घेतला. साधा क्षण होता, पण त्यात एक वेगळीच झलक होती. वेगवेगळ्या विभागांतील आणि वयोगटांतील सहकारी, सगळेजण एकत्र, हसतमुख, निवांत सहलीचा आनंद घेत होते.

पुढे थोड्याच वेळात आम्ही इच्छित ठिकाणी पोहचलो. लोणावळ्याजवळचं एक शांत बंगलो, आजूबाजूला हिरवाई आणि डोंगरांची रांग, गेटमधून आत गेल्यावर दिसणारा मोठा स्विमिंग पूल, त्याच्या शेजारी असलेलं हिरवंगार लॉन आणि हलक्या वाऱ्यात डोलणारी पांढरी झाडं, हा सगळा देखावा नेहमीच्या लॅब आणि ऑफिसच्या वातावरणापेक्षा अगदी वेगळाच होता. दिवसभराचा वेळ अगदी निवांत गेला. कोणी परसरात फेरफटका मारत होतं, कोणी लॉनवर बसून गप्पा मारत होतं, तर कोणी डोंगरांचा नजारा बघत शांतपणे वेळ घालवत होतं. आपसूकच छोट्या–छोट्या गटांत चर्चा रंगल्या. प्रवास, फोटोग्राफी, करिअर, आणि जुन्या प्रोजेक्ट्सच्या आठवणींना उजाळा मिळाला. मिटिंगचा ताण नव्हता, त्यामुळे सगळ्यांकडे एकमेकांकडे मनापासून ऐकण्यासाठी वेळ आणि उत्साह होता.

या ट्रिपचं सगळ्यात खास वैशिष्ट्य म्हणजे यात 'सीनियर–ज्युनियर' असं काहीच नव्हतं. सगळेजण एकाच पातळीवर, एकाच वयाच्या वर्गात असल्यासारखं वावरले. दिवसभर जोमाने मजा झाली, गेम्स, फोटोशूट, आणि रात्री उशिरापर्यंत रंगलेले गप्पांचे फड, हसतखेळत एकमेकांना नव्याने ओळखण्याचा अनुभव अविस्मरणीय ठरला. अशी मजा आणि अनुभव प्रत्येकाने आयुष्यात घ्यावेत असं सगळ्यांनाच वाटलं, कारण नेहमी आपण आपल्या विभागातल्या लोकांसोबतच वेळ घालवतो.

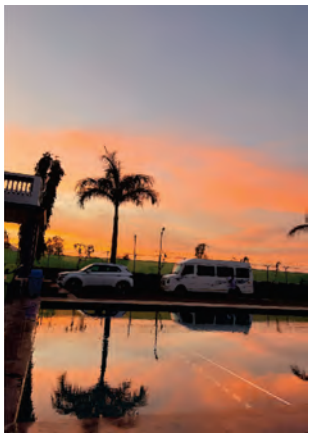

पण इतर विभागातील सहकाऱ्यांसोबत अशा अनौपचारिक वातावरणात भेटणं ही वेगळीच अनुभूती होती. परतीच्या प्रवासाला बस सकाळपेक्षा जास्त गजबजलेली होती. या वेळी चर्चा टेस्ट रिपोर्ट्स किंवा प्रोजेक्ट प्लॅनवर नव्हत्या, तर नव्या आठवणींवर आणि पुढच्या वेळी कुठे जायचं? या प्लॅनवर चालल्या होत्या.

या सहलीने पुन्हा एकदा आठवण करून दिली की प्रत्येक टेस्ट रिपोर्ट, ड्रॉइंग किंवा ॲप्रूवल नोटच्या मागे एक माणूस असतो. परंतु त्यापलीकडे त्याची स्वतःची कथा, कुटुंब आणि ऑफिसबाहेरचं आयुष्य असतं. लोणावळ्याची ही छोटी सहल कालावधीने जरी फक्त एका दिवसाची होती, तरी तिने सगळ्यांना ताजेतवाने केलं, नव्या उर्जेने भरलं, आणि अठअख या आपल्या मोठ्या कुटुंबातील सदस्य म्हणून आपल्याला अधिक जवळ आणलं.

श्री. नागेश कोटकर

एचटीसी–डीडीसी

संगीत : तनाव प्रबंधन की एक कला

आज की दुनिया में, तनाव कई लोगों के लिए एक आम अनुभव बन गया हैं। हम अक्सर ऐसे लोगों के बारे में सुनते हैं जो मस्तिष्क संबंधी विकार, दिल का दौरा या दुर्घटना जैसी बीमारियों से पीड़ित हैं, जो तनाव से जुड़ी हो सकती हैं। यह समझना ज़रूरी हैं कि तनाव क्या हैं और इसे कैसे प्रबंधित या कम किया जा सकता हैं।

तनाव कई रूपों में प्रकट हो सकता हैंचाहे वह भावनात्मक हो, शारीरिक हो या प्राकृतिकऔर अक्सर कार्यस्थल की संस्कृति, काम का भारी बोझ, प्रतिस्पर्धा, समय सीमा, आवश्यकता से अधिक सोचना या पारस्परिक समस्याओं जैसे कारकों से जुड़ा होता हैं।

तनाव कम करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक हैं संगीत। चाहे वाद्य संगीत हो, गायन हो या फिर राग, कई अध्ययनों से पता चला हैं कि संगीत न केवल मानसिक तनाव कम करता हैं, बल्कि मूड भी बेहतर बनाता हैं, स्मरणशक्ति और एकाग्रता बढ़ाता हैं, दर्द से राहत देता हैं और व्यायाम के दौरान शारीरिक प्रदर्शन को बेहतर बनाता हैं।

शास्त्रीय संगीत के कुछ राग, जैसे तोड़ी, अहीर भैरव और भीमपालस, उच्च रक्तचाप से ग्रस्त व्यक्तियों में सिस्टोलिक और डायस्टोलिक रक्तचाप, दोनों को काफ़ी कम करने के साथ-साथ हृदय संबंधी तनाव को भी कम करते हैं।

संगीत आपके जीवन में एक अनोखा आयाम जोड़ता हैं, आपको भीड़ से अलग करता हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप शास्त्रीय संगीत सुन रहे हैं या कोई वाद्य यंत्र बजा रहे हैं, संगीत आपको आराम पहुँचा सकता हैं। यहाँ तक कि अपने पसंदीदा फ़िल्मी गानेजिनमें आपकी निजी यादें जुड़ी होंसुनने से भी मन को शांति मिल सकती हैं।

हालाँकि काम और ज़िम्मेदारियाँ हमेशा रहेंगी, लेकिन अपने शौक, खासकर संगीत के लिए समय निकालना आवश्यक हैं। संगीत में शामिल होना तनाव और चिंता को कम करने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का एक शानदार तरीका हैं।

श्री. श्रीनिवास क. देशमुख
अवसंरचना विकास

Atmanirbhar Bharat initiative setting up new benchmark for Electric Vehicles (EVs)

India is a leading market for EV sector and has seen rapid growth in developing products under the agenda of Atmanirbhar Bharat. The Atmanirbhar Bharat initiative has played a crucial role in establishing new benchmarks for electric vehicles (EVs) by focusing on localisation in domestic manufacturing such as vehicle production, charging stations infrastructure establishment and strengthening the entire EV ecosystem. This seen rapid market growth with more and more EV penetration in India.

Key drivers for the Atmanirbhar Bharat

Government has introduced following policies to support EV sector in India:

PM E-DRIVE Scheme: From April 2024 till March 2026: A comprehensive outlay of ₹10,900 crore scheme running from 2024 to 2026, PM E-DRIVE provides demand incentives for various EV categories, includes e-2W, e-3W, e-trucks, e-buses, and e-ambulances and charging station infrastructure establishments.

This scheme has subsumed Electric Mobility Promotion Scheme (EMPS) 2024 introduced for small period (6 months)

Customer will get the incentive on the purchase of electric vehicle of category as mentioned above. Vehicle manufacturer has to reduce the incentive amount on the final invoice to the customer and has to claim the same on the PM E drive portal. In this way benefits will be transferred to customer to boost the EV economy and penetration in India.

Production-Linked Incentive (PLI) Schemes: from 2021 till 2028: A comprehensive outlay of nearly ₹26000 crore scheme running from 2021 to 2028.

This policy offers incentives to companies investing in advanced automotive technologies, including EVs and the manufacturing of Advanced Chemistry Cell batteries. This scheme supports to boost the production in India and attract global market.

Scheme for Promotion of Manufacturing of Electric Passenger Cars in India: This policy aims to attract global EV manufacturers by offering reduced customs duties on imports for a period of 5 years. In exchange, manufacturers must achieve 50% domestic value addition within five years.

FAME I and FAME-II Scheme: From 2019 till 2024: The Faster Adoption and Manufacturing of Hybrid and Electric Vehicles (FAME-I and FAME-II) scheme incentivized the purchase of electric two-wheelers, three-wheelers, and four-wheelers and supported the creation of charging stations.

Other supportive measures in EV sector: Additional government benefits, such as the reduced GST on EVs and chargers to 5%, waiver of road taxes in many states. Exclusion from many tolls across India such as on ATAL Setu, Samruddhi highway etc. provides boost to EV sector.

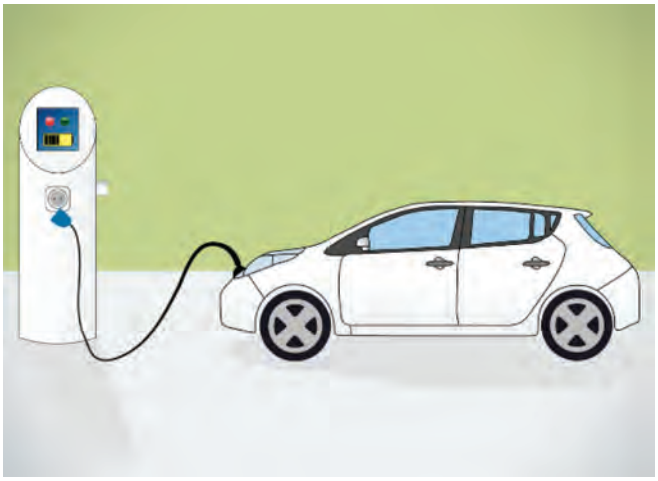

Scheme benefits on EV manufacturing and adoption in India

1. Make in India approach (Research and development of products in India)
2. Increased domestic manufacturing in India.
3. Scheme attracts more jobs in all EV segment manufacturing.
4. Growth in EV sales
5. Development of supply chain for localized products.
6. Public transport (E bus) reduces the on-road emission.

Government has initiated and supported to run these schemes in India. As a responsible Indian citizen, our duty is to support the Government initiated schemes, which aims to reduce the on-road emissions and maintain the environment a better place for living. Jay Hind !!

Mr. Ashish R. Joshi
AED

बिजली बचाने के लिए प्लग निकालें : कैसे एक छोटी सी आदत ऊर्जा की बर्बादी कम कर सकती हैं

क्या आपने कभी देखा हैं कि आपका चार्जर बिना फ़ोन के सॉकेट में लगा रहता हैं? यह अभी भी बिजली की खपत कर रहा हैं! इसे फैंटम लोड कहते हैंबिना इस्तेमाल के भी उपकरणों से बहुत कम बिजली की खपत होती हैं।

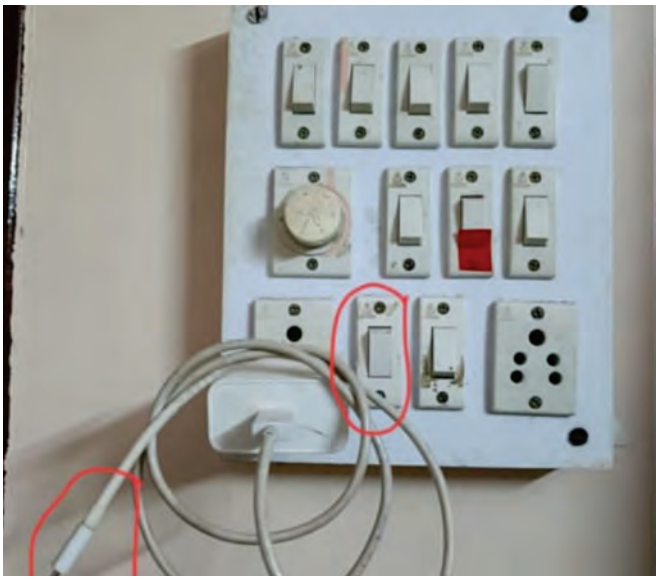

☞ कितना? लगभग ०.१–०.५ वाट प्रति चार्जर। सुनने में कम लगता हैं? दुनिया भर में लाखों चार्जर्स से गुणा करें, तो यह बहुत बड़ी ऊर्जा हानि हैं।

☞ प्रभाव : बर्बाद ऊर्जा = ज़्यादा कार्बन उत्सर्जन = बड़ी जलवायु समस्या।

☞ यह क्यों मायने रखता हैः हर अनप्लग चार्जर स्थिरता की ओर एक कदम हैं। छोटी आदतें, बड़ा बदलाव।

सुझाव : चार्जर का प्लग हटाएँ। ऊर्जा बचाएँ, पैसा बचाएँ, धरती बचाएँ।

क्या आप कार्रवाई करने के लिए पर्याप्त चिंतित हैं?

श्री. शुभम मालवाडे
क्यूएमडी

भूमिगत खदान में काम – एक चुनौतीपूर्ण और भावनात्मक अनुभव

यह बात हैं २०१९ की, जब एक कंपनी जो भूमिगत खदानों में काम करती थी, उसने हमसे संपर्क किया। उस समय हमारी प्रयोगशाला में ऑटोमोबाइल क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों से भी कई प्रोजेक्ट्स आने लगे थे – जैसे कि एग्रिकल्चर, इलैक्ट्रिकल, मेडिकल, प्रोसेस इंडस्ट्री आदि। फील्ड डेटा मेजरमेंट और अन्य सेवाएं देने के लिए हमने एक 'डाइवर्सिफाइड' रणनीति अपनाई थी।

इसी दौरान हमें एक माइनिंग प्रोजेक्ट मिला। यह प्रोजेक्ट झारखंड के धनबाद में स्थित भूमिगत खदान से संबंधित था। वहां दो विशाल मशीनें थीं – बोल्टर माइनर और फीडर ब्रेकर, जिन पर राइड कम्फर्ट के वाइब्रेशन मेजरमेंट का काम करना था। यह हमारे लिए पहली बार था, क्योंकि इससे पहले हमने राइड मेजरमेंट के कई प्रोजेक्ट्स वाहन क्षेत्र में किए थे। यह एक नई जिम्मेदारी और अवसर था।

हालांकि यह काम जोखिम भरा था, लेकिन हमारे पास पहले के अनुभव और तकनीकी संसाधन थे, जिससे हमें विश्वास था कि हम यह कर सकते हैं। हमने इस अवसर को स्वीकार किया और अध्ययन शुरू किया।

मुझे याद हैं, बचपन में मैंने अमिताभ बच्चनजी की फिल्म 'काला पत्थर' देखी थी, जिसमें कोयले की खदान में काम करने वाले लोगों की कठिन जिंदगी दिखाई गई थी। अंधेरे में, धूल और कोयले से भरे वातावरण में, लोग अपने परिवार के लिए जान जोखिम में डालकर काम करते हैं। यह दृश्य मेरे मन में गहराई से बैठा था।

अब लगभग ४० साल बाद, तकनीक काफी उन्नत और सुरक्षित हो चुकी हैं। कई काम मैनुअल से ऑटोमेटिक हो गए हैं, लेकिन फिर भी जोखिम और कठिनाई का स्तर अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक हैं। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से हमें उन लोगों के लिए कुछ अच्छा करने का अवसर मिला।

फरवरी २०१९ में मैं और मेरे तीन सहयोगी – संदीप, राजेंद्र और मंगेश – धनबाद के लिए रवाना हुए। हमने पुणे से कोलकाता की फ्लाइट ली और फिर कोलकाता से धनबाद सड़क मार्ग से गए। यह लगभग २७० किलोमीटर का सफर था, जिसमें दुर्गापुर और आसनसोल जैसे शहर पड़े।

धनबाद को 'कोल कैपिटल ऑफ इंडिया' कहा जाता हैं। यहां लगभग ४५० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में खनन होता हैं। धनबाद-झरिया-रानीगंज क्षेत्र में लगभग ७० से ७५ बिलियन टन कोयला हैं। १७७४ में ब्रिटिश अधिकारियों ने रानीगंज में कोयला खनन शुरू किया था।

हमें मुंनिध नामक भूमिगत खदान में जाकर इन दो मशीनों पर वाइब्रेशन मेजरमेंट करना था। हमें पहले इस काम की गहराई का अंदाजा नहीं था, लेकिन हमने तैयारी कर ली थी। हमारे

पास २५-३० किलो वजन की ३-४ पेटियां थीं।

मुख्य सुरक्षा गेट पर हमने उपकरणों की एंट्री करवाई और फिर एक वाहन से कंपनी के मुख्य साइट ऑफिस पहुंचे। वहां मजदूरों की हलचल थी – टॉर्च वाले हेलमेट, गम बूट, बेल्ट पहने हुए वे एक दिशा में जा रहे थे। हमने उपकरण एक कमरे में रखे और मीटिंग के लिए आगे बढ़े।

मीटिंग के बाद हमें पता चला कि जिन मशीनों पर हमें काम करना था, वे पूरी तरह भूमिगत थीं और कभी सतह पर नहीं आतीं। उनका आकार इतना बड़ा था कि उन्हें ऊपर लाना असंभव था। यह हमारे लिए थोड़ा चौंकाने वाला था, क्योंकि अब हमें सारा काम नीचे जाकर करना था।

हमने सुरक्षा नियमों को समझा, प्रशिक्षण लिया, और कंपनी के सुरक्षा अधिकारी से जानकारी प्राप्त की। हमें गम बूट, हेलमेट, ऑक्सीजन सिलेंडर जैसे सुरक्षा उपकरण दिए गए। हर व्यक्ति के पास लगभग ३-४ किलो अतिरिक्त वजन था। साथ ही, हमारे उपकरणों की बैग्स को ले जाने के हेतु चार मजदूर भी साथ थे।

यह सब सुरक्षा साधनों को पहनने के बाद हमें ऐसा लगा जैसे हम युद्ध के लिए तैयार सैनिक हों – ढाल, तलवार, कवच पहने हुए। लेकिन मन में थोड़ा डर भी था, क्योंकि हमने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं लिया था।

हमें नीचे ले जाने के लिए एक विशाल लिफ्ट थी। रास्ते में कई मजदूर अपने पोशाक में दिखे – कुछ फावड़ा लेकर जा रहे थे, कुछ लौट रहे थे। उनके चेहरे और कपड़े कोयले की धूल से काले थे।

धनबाद में एक कहावत हैः

अगर आप धनबाद में एक दिन बिताते हैं, तो आपके फेफड़ों में थोड़ा कोयला जरूर जाएगा।

यहां का वातावरण ऐसा ही हैं – धूल, कोयला, जोखिम और मेहनत। कुछ मजदूरों के पास इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी थे, जिससे लगा कि वे माइनिंग इंजीनियर्स होंगे।

धनबाद में भारत का सबसे पुराना माइनिंग संस्थान हैं - Indian School of Mines and Applied Geology (ISM), जिसकी स्थापना 1926 में ब्रिटिश काल में हुई थी। 2016 में इसका नाम बदलकर IIT धनबाद कर दिया गया। यहां माइनिंग पर व्यापक शोध होता हैं।

अंततः हम अपने पहले गंतव्य स्थान पर पहुँच गए। वहाँ पहले से कई मजदूर इकट्ठा थे और धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जा रही थी। जहाँ हम रुके थे, वहाँ दो बड़ी पुलियाँ थीं जिनमें वायर रोप लगे थे और उनके नीचे जालीदार पिंजरे जैसी लिफ्टें थीं। ये विशाल लिफ्टें एक साथ कई मजदूरों को नीचे खदान में ले जाने और ऊपर लाने के लिए बनी थीं। सब कुछ मैंकेनिकल प्रणाली से संचालित था।

कुछ ही समय में एक बड़ी घंटी बजी और भीड़ एक ओर सिमटने लगी। हम भी उस भीड़ का हिस्सा बन गए और पिंजरे जैसी लिफ्ट की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगे। हमारे साथ मौजूद सुरक्षा अधिकारी और मजदूर हमारी मदद कर रहे थे। अब हमें स्पष्ट हो गया था कि हमें भी इन्हीं मजदूरों के साथ भूमिगत खदान में जाना हैं।

हमने एक-दूसरे की ओर देखा – यह सब हमारे लिए बिल्कुल नया था। शहरों में लिफ्टें सीमित क्षमता, सुरक्षा और आराम के साथ चलती हैं, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं था। दोनों ओर सरकने वाले जालीदार दरवाजे थे। इसे खदानों में केज या मैन राइडिंग होइस्ट कहा जाता हैं। यह केज लगभग १.५ मीटर चौड़ा, २.५

से ३ मीटर लंबा और २ से २.५ मीटर ऊँचा था, जिसमें लगभग ४० मजदूरों को एक साथ ऊपर-नीचे ले जाया जाता हैं।

हम भी उस भीड़ के साथ अंदर चले गए। लोग इतने पास-पास खड़े थे कि ऊपर से पीछे देखना भी मुश्किल था। मजदूर हमें जिज्ञासु नजरों से देख रहे थे, लेकिन कोई बात नहीं कर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वे अपने विचारों की भीड़ में खोए हुए हों। उनके लिए यह सब रोजमर्रा की बात थी, लेकिन हमारे लिए यह एक अनोखा अनुभव था।

केज भरने के बाद दरवाजे हाथ से बंद किए गए और अंदर से कुंडी लगाई गई। एक सीटी की आवाज के साथ यह भरी हुई लिफ्ट धीरे-धीरे पृथ्वी के गर्भ में उतरने लगी। शुरुआत में गति धीमी थी, लेकिन फिर तेज हो गई। ऊपर का उजाला धीरे-धीरे गायब होने लगा और चारों ओर अंधेरा छा गया। हम एक पूर्ण अंधकार में नीचे जा रहे थे।

इस केज की गति लगभग ६ से १२ मीटर प्रति सेकंड थी, यानी लगभग ४० किलोमीटर प्रति घंटा। लगभग ५ से ७ मिनट में हमें फिर से रोशनी और आवाजें सुनाई देने लगीं – हम अपने दूसरे गंतव्य स्थान पर पहुँच चुके थे। दरवाजा खुला और मजदूर तेजी से बाहर निकलने लगे। हम भी उस लोहे के पिंजरे से बाहर आए।

बाहर का दृश्य देखकर हम चकित रह गए – वहाँ एक प्रशस्त परिसर, चारों ओर तेज रोशनी, ठंडी हवा का झोंका और शांत वातावरण था। हमें विश्वास ही नहीं हुआ कि हम पृथ्वी के गर्भ में लगभग ६०० मीटर नीचे आ चुके थे। यह अनुभव अत्यंत विलक्षण था।

भीतर पहुँचने पर सभी मजदूर एक स्थान पर इकट्ठा हो रहे थे। एक छोटी सी घंटी की आवाज सुनाई दी। पास जाकर देखा तो वहाँ एक छोटा सा सुंदर हनुमानजी का मंदिर था। एक पल को मन में सवाल आया – पृथ्वी के गर्भ में हनुमानजी का मंदिर क्यों? लेकिन तुरंत ही रामदास स्वामी रचित मारुति स्तोत्र की पंक्तियाँ याद आ गईं:

दिननाथा हरीरूपा सुंदरा जगदंतरा पातालदेवताहंता भव्यसिंदूरलेपना

पौराणिक कथाओं के अनुसार, हनुमान ने पाताल लोक के असुरों का नाश किया था। इसलिए उन्हें भय, भूत-प्रेत और नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करने वाला देवता माना जाता हैं। कुछ मजदूरों ने मंदिर में नारियल फोड़ा और अपने दिन के काम की शुरुआत की। यह देखकर हमें भारतीय संस्कृति में श्रद्धा का महत्व स्पष्ट रूप से समझ में आया।

हमने भी हनुमानजी को प्रणाम किया और सुरक्षित कार्य की प्रार्थना करते हुए आगे बढ़े।

इंस्ट्रूमेंट्स की बैग्स लेकर मजदूर पहले ही आगे निकल चुके थे। हमारे शरीर पर पहनाए गए सेफ्टी किट के कारण शुरुआत में चलना थोड़ा मुश्किल हो रहा था। रास्ता आगे कम रोशनी वाली संकरी गलियों से होकर जा रहा था। चारों ओर अंधेरा, भयावह शांति और आगे एक बड़ा दरवाजा। यह दरवाजा चार लोगों को मिलकर जोर लगाकर खोलना पड़ा, क्योंकि अंदर से प्रेशराइज्ड हवा छोड़ी जा रही थी। जमीन से एक बड़ा पाइप अंदर हवा पहुंचाने का काम कर रहा था।

खदान के अंदर के रास्ते बेहद ऊबड़-खाबड़ थे। कुछ जगहों पर कीचड़ भी था। कोयला खोदते हुए कई सुरंगें अलग-अलग

दिशाओं में बनाई गई थीं, जिससे यह तय करना कि किस दिशा में जाना हैं, एक अकेले व्यक्ति के लिए असंभव था – मानो कोई भूल-भुलैया हो।

हम सभी अपने साथ चल रहे सुरक्षा अधिकारी के पीछे चले जा रहे थे।

इस संकरी सुरंग से गुजरते हुए हमने देखा कि आसपास बहुत सारे कॉकरोच और चूहे थे। इस वातावरण में ये जीव कहाँ से आते हैं, यह देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। जब हमने सुरक्षा अधिकारी से इस बारे में बात की, तो उन्होंने बताया कि चूहे

जानबूझकर छोड़े जाते हैं, और इसके पीछे एक वैज्ञानिक कारण है।

पुराने समय में आज जैसी आधुनिक सुरक्षा प्रणाली और सेंसर नहीं थे। भूमिगत खदानों में मीथेन, कार्बन मोनोऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड जैसे विषैले गैसें बनती हैं। चूहा एक अत्यंत संवेदनशील जीव है – अगर गैस का स्तर बढ़ता है, तो वह बेचैन होकर भागने लगता है या बेहोश हो जाता है। यह संकेत मजदूरों को खतरे की जानकारी देता है, जिससे वे समय रहते बाहर निकल सकते हैं। इसलिए चूहा एक पारंपरिक गैस सेंसर के रूप में खदानों में इस्तेमाल होता रहा है।

आज के आधुनिक युग में इसके स्थान पर इलेक्ट्रॉनिक गैस सेंसर, अलार्म, ऑक्सीजन मीटर आदि का उपयोग होता है। कॉकरोच प्राकृतिक रूप से यहाँ पाए जाते हैं और ये अच्छी हवा, नमी और ऑक्सीजन स्तर के संकेतक होते हैं।

लगभग २ किलोमीटर अंदर चलने के बाद हम अपने अंतिम गंतव्य स्थान पर पहुँचे।

यहाँ कई मजदूर काम कर रहे थे। बीच में प्रकाश की व्यवस्था थी, लेकिन बाकी जगहों पर अंधेरा था। वहाँ काम करने के लिए हेलमेट की टॉर्च का सहारा लेना पड़ता था।

वहीं पर दो विशाल मशीनें रखी थीं। एक तरफ कोयला खोदना, ऊपर की छत को सुरक्षित करना और फिर निकले हुए कोयले को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर कन्वेयर बेल्ट पर भेजना – इन सभी कार्यों के लिए इन दोनों मशीनों का उपयोग हो रहा था।

कोयला खोदते समय छत गिरने का खतरा होता है, इसलिए 'Bolter Miner' नामक मशीन छत में बोल्ट लगाकर धातु की सुरक्षा जाली लगाती है। इस मशीन को चलाने के लिए २-३ मजदूर उस पर खड़े होकर काम करते हैं।

खदान का कोयला आकार में बड़ा और कठोर होता है, इसलिए उसे वैसे ही बाहर ले जाना मुश्किल होता है। ऐसे में 'Feeder Breaker' नामक मशीन उस कोयले को छोटे टुकड़ों में तोड़ती है, ताकि उसे कन्वेयर बेल्ट पर आसानी से भेजा जा सके।

हमारा काम इन दोनों मशीनों पर आने वाले वाइब्रेशन (कंपन) को मापना था, ताकि यह पता लगाया जा सके कि यह स्तर Human Ride Comfort के अनुसार सुरक्षित है या नहीं।

हमारी टीम ने पूरी तैयारी की। मैंने वहाँ काम कर रहे ऑपरेटर और मजदूरों से बात की – वे कितने समय काम करते हैं, कहाँ खड़े होकर मशीन चलाते हैं, आदि की जानकारी ली। उसी के अनुसार हमने सेंसर लगाने की जगहें तय कीं।

जब हमने वास्तविक काम शुरू किया, तब हमें एहसास हुआ कि इस वातावरण में काम करना कितना कठिन है। हमने तय योजना के अनुसार दोनों मशीनों की टेस्टिंग की और डाटा एकत्र किया। इस दौरान हमने सभी सुरक्षा नियमों का सख्ती से पालन किया।

यह अनुभव हमारे लिए अत्यंत विलक्षण और जीवनभर याद रहने वाला था।

इस प्रोजेक्ट के माध्यम से हमें भूमिगत खदान में जाने का अवसर मिला, वहाँ की परिस्थितियाँ प्रत्यक्ष देखने को मिलीं, और वहाँ काम करने वाले लोगों से संवाद करने का मौका मिला।

इस कठिन वातावरण में ये लोग अपने जीवन के कई वर्ष सिर्फ अपने पेट के लिए यहाँ बिताते हैं – अंधेरा, कीचड़, गर्मी, नमी, ऊपर से टपकता पानी, विषैली गैसें, जमीन धंसने का डर – फिर भी ये लोग खुश और निश्चिंत नजर आते हैं।

उनके जीवन में कोई बड़ी अपेक्षा नहीं, कोई शिकायत नहीं, कोई लालच नहीं, कोई ईर्ष्या नहीं। हमें यह एहसास हुआ कि हम उनके मुकाबले कितना सुरक्षित और सुखी जीवन जीते हैं।

काम पूरा होने के बाद हमने सभी उपकरण और सेंसर हटाए, बैग्स में पैक किया और वहाँ के मजदूरों और अधिकारियों से विदा ली।

यह अनुभव अद्भुत था – हमने वह दृश्य अपनी आँखों में समेट लिया। इस तरह हमने एक और नया और चुनौतीपूर्ण प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरा किया।

जब हम खदान से बाहर आए और नीला आकाश, साफ हवा और सूर्य का प्रकाश देखा, तो मन ही मन उस सृष्टिकर्ता का धन्यवाद किया।

श्री. योगेश धगे
एसडीएल

मैं और मेरी EV!

आज जहां भारत में २०.३ लाख इलेक्ट्रिक वाहन सड़कों पर दौड़ रहे हैं, साल २०१८ के अंत तक यह आंकड़ा केवल १ लाख तक ही सीमित था.

वर्ष २०१९ की शुरुआत में, भारत में इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बाजार अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में था, तभी मैंने इलेक्ट्रिक वाहन लेने की चेष्टा की.

हरित परिवहन को प्रोत्साहन देने और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नागरिकों द्वारा इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर रुझान उस वक्त तेजी से बढ़ रहा था। इसी परिप्रेक्ष्य में, मैंने विद्युत चालित दोपहिया वाहन (EV Bike) का उपयोग आरंभ किया।

लंबी प्रतीक्षा अवधि के उपरांत, दिसंबर २०१९ में मुझे इलेक्ट्रिक बाइक की डिलीवरी प्राप्त हुई, जिससे पुणे में यह मॉडल ग्राहकों तक पहुंचने वाली प्रथम इकाई बना। भारत की पहली हरित (ग्रीन) संख्या-पट्टिका (नंबर प्लेट) युक्त इलेक्ट्रिक बाइक का स्वामित्व प्राप्त करना मेरे लिए एक विशिष्ट एवं प्रेरक अनुभव था।

इस बाइक को दि ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एआरएआई) द्वारा एक पूर्ण चार्ज पर १५६ किलोमीटर की प्रमाणित यात्रा सीमा प्रदान की गई हैं। उस समय यह देश की प्रथम इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल थी, क्योंकि तब तक अन्य सभी इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन मुख्यतः ई-स्कूटर या मोपेड श्रेणी में सम्मिलित रहे हैं। पहले पल्सर ब्रांड के विज्ञापन की टैंगलाइन ''डेफिनेटली मेल'' ने उपभोक्ता वर्ग में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला था, और इसी प्रेरणा से इस नई इलेक्ट्रिक बाइक की बुकिंग तत्काल की ।

यह इलेक्ट्रिक बाइक **'WHY'** जेनरेशन के लिए हैं। रेगुलर कम्यूट के लिए **1.5** ली. पेट्रोल इंजन कार चलाने के बाद, इस प्रयोगीकरण के पीछे कुछ ठोस कारण थेः बढ़ती पेट्रोल की कीमतें, पुणे का भारी ट्रैफिक और साफ-सुथरे वातावरण में योगदान देना। फिर भी जब आप अपनी कार की तेज़ और

आरामदायक ड्राइव के आदि हो जाते हैं, तो किसी ऐसी चीज़ को अपनाना मुश्किल होता हैं जिसे शहर में किसी ने उपयोग ही न किया हो डेली कम्यूट के लिए। मैं पुणे में इसे रखने वाले पहले दस ग्राहकों में शामिल था और अपना अनुभव, एत उत्साही लोगों के साथ शेयर करना चाहता हूँ।

भारी ट्रैफिक वाले शहर में रोज़ाना चार-पहिया चलाना अपनी परेशानियाँ लाता हैं। अगर आप ट्रैफिक सिग्नल पर कार की खिड़की खोल दें तो आसपास के वाहनों से निकलता कार्बन आपकी सांसों को कुछ देर के लिए चोक कर सकता हैं। यही वजह थी कि मैंने रोज़ का सफर तय करने के लिए बुलेट की जगह इलेक्ट्रिक बाइक बुक की। हाँ, आउटडोर ट्रिप्स और फैमिली कम्यूटिंग के लिए अभी भी गैसोलीन **SUV** इस्तेमाल करता हूँ, लेकिन **AI**-सक्षम इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल चलाने का अनुभव बहुत खास था । बाइक की 'फायरिंग' ध्वनी आपके एड्रेनालिन को जगा देती हैं। और जब रिमोट से बाइक स्टार्ट होती हैं और 'रिबेल' साउंड सुनाई देती हैं (बिना किसी के बैठे) तो लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं । वाकई यह फ्यूचरिस्टिक लगता हैं क्योंकि बाइक की सारी महत्वपूर्ण जानकारी मोबाइल एप पर मिलती हैं। पीछले साल तक कुछ लोग तो सोचते थे कि ग्रीन नंबर प्लेट क्यों हैं और कई लोग साइलेंसर ढूंढ़ते थे ।

यह ई-बाइक उच्च-स्तरीय बाइकों की तुलना में अच्छी त्वरण प्रदान करती हैं, लेकिन अधिक त्वरण का अर्थ हैं अधिक बैटरी की खपत, और इसके परिणामस्वरूप रेंज की चिंता बढ़ जाती हैं । रेंज से जुड़ी एक बात यह हैं कि प्रारंभिक कुछ किलोमीटर तक यह काफी स्थिर रहती हैं, ठीक वैसे ही जैसे टी-20 मैच की शुरुआती पचास गेंदों में रन लगातार बढ़ते हैं;

परंतु जैसे-जैसे मैच अपने अंतिम चरण की ओर बढ़ता हैं, गेंदों के अनुपात में रन धीमे बढ़ते हैं। मेरी ई-बाइक के साथ भी यही स्थिति होती हैं पहले पचास किलोमीटर तक बैटरी प्रतिशत के अनुसार रेंज स्थिर रहती हैं, परंतु जैसे-जैसे बैटरी समाप्ति की ओर बढ़ती हैं, स्थिरता घट जाती हैं, और कुल रेंज पूरी १०० प्रतिशत बैटरी पर केवल ९० किलोमीटर तक सीमित रह जाती हैं। यही वास्तविक 'रेंज एंग्जाइटी' (Range Anxiety) हैं।

और यह चिंता तब पीड़ा में बदल जाती हैं, जब आसपास कोई चार्जिंग पॉइंट उपलब्ध नहीं होता। मुझे याद हैं कि एक 'होली' के दिन (जो भारत के कई हिस्सों में प्रमुख त्योहार हैं), जब बैटरी स्टेशन बंद था, मुझे बाइक सड़क के किनारे छोड़नी पड़ी और बैटरी को घर पर चार्ज करने के लिए टैक्सी से ले जाना पड़ा। सौभाग्य से मेरी ई-बाइक में एक पोर्टेबल बैटरी दी गई हैं जिसे स्वैप (बदल) किया जा सकता हैं, इसलिए कुछ घंटों की चार्जिंग के बाद में बाइक को फिर से घर ला सका।

लेकिन जिन वाहन मालिकों के पास चार पहिया वाहन हैं जिनमें पोर्टेबल बैटरी की सुविधा नहीं होती, उन्हें ऐसी परिस्थितियों में गंभीर असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता हैं। वर्तमान में बैटरी प्रौद्योगिकी और चार्जिंग अवसंरचना (Infrastructure) दोनों पर व्यापक स्तर पर कार्य जारी हैं।

डॉ. अतुल रा. ठाकरे
बीडीसीपी

हिवाळ्यातील हवाः धुक्याची चादर की धुराची?

हिवाळा आला की महानगरांतील सकाळी आकाश निळे नसते धुसर असते. हवा थंडगार असते, पण श्वास मात्र गरमागरम होतो. धुकं आणि धूर एकत्र येऊन शहराला चादर घालतात; मग कार्यालयात पोहोचणे, शाळेत जाणे, कसरत करणे, सगळ्यालाच गुदमरल्यासारखं वाटतं. हे दृश्य फक्त दिल्लीपुरतं नाही; कोलकाता, मुंबई, चेन्नई, बेंगळुरू, सर्वत्रच हिवाळ्यात हवा बिघडते, असे अलीकडच्या विश्लेषणांमध्ये स्पष्ट दिसते.

हिवाळ्यात हवा बिघडते कशी?

हे फार शास्त्रीय सांगायचं नाही, सोपं समजाहिवाळ्यात थंड हवा जमिनीवर बसते आणि वर उबदार हवा थर बनवते; जणू झाकणच बसलं. परिणामी वाहने, बांधकाम, कचर्याची जळण, छोटेमोठे उद्योग, ज्यांच्याकडून धूर येतो तो वर जाऊ शकत नाही; तोच परत आपल्या श्वासात उतरतो. वारे मंद असतात, ओलावा जास्त असतो; सकाळसंध्याकाळी घराबाहेरबाहेर जाळण्याच्या सवयींनी हवा आणखी जड होते. उत्तर भारतात अपवादाने पराली जळते तेव्हा काही दिवस तर हवा थेट धुरकट होते; पण अनेक अहवाल सांगतात की अलीकडे परालीच्या घटनांत घट झाली तरी शहरातील स्थानिक स्रोत ज वाहतूक, बांधकामधूळ, कचराजळण, यांचा हिस्सा पुरेसा मोठा आहे. म्हणजे शेजाऱ्यांनी धूर केला म्हणून माझं घर काळं झालं हा बहाणा आता फारसा चालत नाही.

अशा काळात सरकार आपत्कालीन पावले उचलतेः बांधकाम कामे थांबवली जातात, जुन्या डिझेल ट्रकांना शहरात घुसू दिलं जात नाही, शक्य तिथे 'वर्कफ्रॉमहोम' लावलं जातं, शाळा हायब्रिड पद्धतीने चालतात. परिणामपुरवठा साखळी ढासळते, प्रवास वेळखाऊ होतो, बाहेरचे खेळ बंद होतात. आणि आरोग्य विभाग काय म्हणतो? सकाळसंध्याकाळ बाहेरचा व्यायाम कमी करा, गरज असेल तर मास्क घाला, नाजूक गटांनी घरातच रहा हे सल्ले आता जवळजवळ प्रत्येक हिवाळ्यातल्या बुलेटिनचा स्थायी भाग आहेत.

जागतिक आरोग्य संघटना (**WHO**) सांगते की सूक्ष्म कण (**PM2.5**) फार धोकादायक असतात; वर्षभराचा सुरक्षित स्तर अतिशय कमी ठेवला आहे. याचा साधा अर्थहवा मध्यम दिसत असली तरी दीर्घकाळ संपर्क आरोग्याला हानी पोहोचवू शकतो. म्हणूनच संवेदनशील नागरिकलहान मुले, ज्येष्ठ, अस्थमाचे रुग्णयांनी हिवाळ्यात अधिक खबरदारी घ्यावी.

प्रशासन काय करू शकतं? (आता कृतीची वेळ)

हिवाळा आलाच की स्मॉगटॉवर्स उभारण्यापेक्षा जरा जमिनीवरची कामं प्राधान्याने करू याः

वाहतूक स्वच्छ करा

सार्वजनिक बस, मेट्रो, ईबस यांची संख्या व वारंवारिता वाढवा; जुन्याप्रदूषित वाहनांवर कडक तपासणी, झणउ नसल्यास इंधन नाहीसरळ नियम. आवश्यक मालवाहतूक **EV/CNG** कडे वळवा.

बांधकामधूळ आटोक्यात

मोठ्या प्रकल्पांवर रिअलटाइम हवा सेन्सर व डस्ट निर्देशक अनिवार्य; साइटवर जाळी/कव्हर, रस्ता स्वच्छता यांत्रिकीकरण, व्हीलवॉश, ओपनस्टोरेज बंद. पुणे महापालिकेने अशा सेन्सरप्रणालीची सक्ती सुरू केली आहेचांगला आदर्श.

उद्योग व वीज प्रकल्प

उत्सर्जन मानकांचे कठोर पालन; शक्य तिथे कृषीअवशेषांचे बायोमास पेलेट्ससह कोफायरिंग वाढवणे; सतत उत्सर्जनमॉनिटरिंग आणि उल्लंघनांवर दंड.

परालीचे शाश्वत पर्याय

शेतकऱ्यांना यंत्रसामग्री, जैवविघटन, पेलेट/बायोगॅस साखळी, संध्याकाळची गस्त, हे सर्व त्यात्या राज्यांमध्ये समन्वयाने. शेतकऱ्यांना दोष देऊन हवा स्वच्छ होत नाही; त्यांना पर्याय दिल्यावर मात्र बरे परिणाम दिसतात.

डेटाआधारित शासन

शहरपातळीवरील स्रोतनकाशे (कोठे किती धूर?) लवकर पूर्ण करा; 'हायरिस्क' तासात (पहाट/संध्याकाळ) क्रीडा कार्यक्रम घरात, शाळा/कार्यालयांसाठी **AQI**-ट्रिगर मार्गदर्शक; जनजागृतीसाठी रोजच्या सल्ल्यांचे स्पष्ट, साध्या भाषेत संप्रेषण. राष्ट्रीय स्वच्छ हवा कार्यक्रम (**NCAP**) आहेच त्यात

निधीवापर, मॉनिटरिंग आणि पारदर्शकता अधिक मजबूत करणे आवश्यक.

निष्कर्ष : धुरात थोडा विनोद, पण कामात पूर्ण गांभीर्य

हिवाळ्यातली हवा ही निसर्गाची मूड स्विंग नाही; ती आपल्या शहरांची परीक्षा आहे. आपणच धूर तयार करून मग त्यावर धुक्याचा दोष देतो जणू कपडे धुवायचे राहिले आणि हवामानाला दोष दिला! उपायांचा मार्गही तितकाच सरळ आहेः वाहतूक स्वच्छ, बांधकाम नीट, कचराजळण बंद, उद्योगनियमन कडक, शेतकऱ्यांना पर्याय, आणि सर्व निर्णय डेटाआधारित. तुम्हीआम्ही आणि प्रशासन, सर्वांनी थोडी शिस्त पाळली, तर हिवाळ्यातली सकाळ धुक्यातील रोमॅन्स राहील; धुरातील त्रास नाही.

श्री. प्रसन्न सुतार
ईडीएल विभाग

Outstanding Achievements of Miss. Riddhi and Siddhi D/o of Ashish Walse

Miss Siddhi Ashish Walase achieved success in the Inter School Competition, securing the 3rd Position in both the Tug of War Competition and the Kho-Kho.

Miss. Riddhi Ashish Walase achieved notable success in multiple competitions. In the National Level Art Competition organized by Kaladarpan Art Academy, she was awarded the Silver Medal in the Handwriting Competition and the Bronze Medal in the Vegetable Print Competition. Additionally, in an Inter School Competition, she secured the 2nd Position in the Tug of War Competition

Achievements of Master Chinmay Deshmukh

Master Chinmay Deshmukh was honoured by the Minister of Parliament and Minister of Aviation, Hon. Shri. Muralidhar Mohol, MLA Hon. Shri. Bapusaheb Pathare, Ex-corporator and Standing Committee Chairman Shri. Yogesh Mulik, along with Ex-corporator Shri. Jarhad and others. He achieved the Elite World Record and India Record by solving 75 mental arithmetic multiplications in the fastest time at the age of 12 years, 1 month, and 12 days. Additionally, he secured the third position in a national-level alumni competition organized by Indian Abacus in Chennai on 19th July 2025. Congratulations to Chinmay and Mr. Shriniwas Deshmukh for the achievement.

Outstanding Achievements of Master Anvit V. Kharade

Master Anvit V. Kharade is son of Mr. Vikram P. Kharade, employee of ARAI is a student of 1st Standard, demonstrated exceptional accomplishments through his passion for learning and excellence. He was awarded gold medals in several prestigious Olympiads conducted by the Science Olympiad Foundation (SOF), including the International General Knowledge Olympiad (IGKO), National Science Olympiad (NSO), and International Mathematics Olympiad (IMO). In addition to his Olympiad successes, Anvit also excelled in language competitions, winning gold medals at both the school level and state level English Marathon competitions. These achievements at such a young age reflected his curiosity, discipline, and love for knowledge, inspiring many young learners and bringing pride to his family and school.

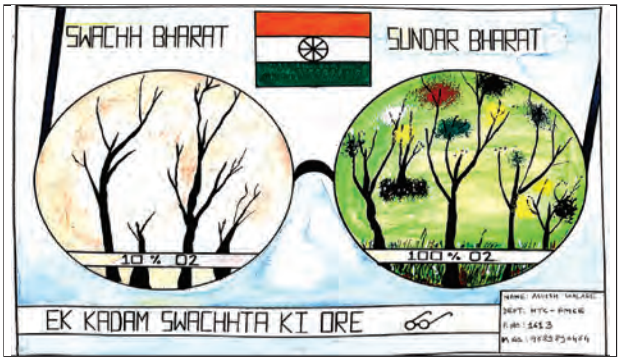

Mr. Ashish Walase was awarded Second Prize in the Poster Making Competition, and received a memento presented by Mr. S. D. Hendre, General Manager, FMCE.

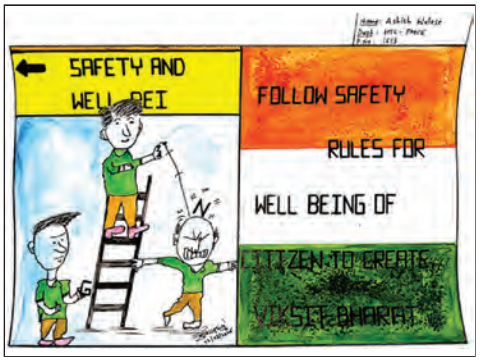

Mr. Ashish Walase was awarded Second Prize in the Poster & Cartoon Making Competition, and received a memento presented by Ms. M. S. Jambhale, Sr. DD, HoD, FMCE & Academy.

Mr. Pundlik Gadekar from AED-HTC received a gold medal for his master's degree in MSc Instrumentation Science from Savitribai Phule Pune University in September 2025.

Paintings by Mr. Rahul Mahajan, Sr. Dy Director, EDS

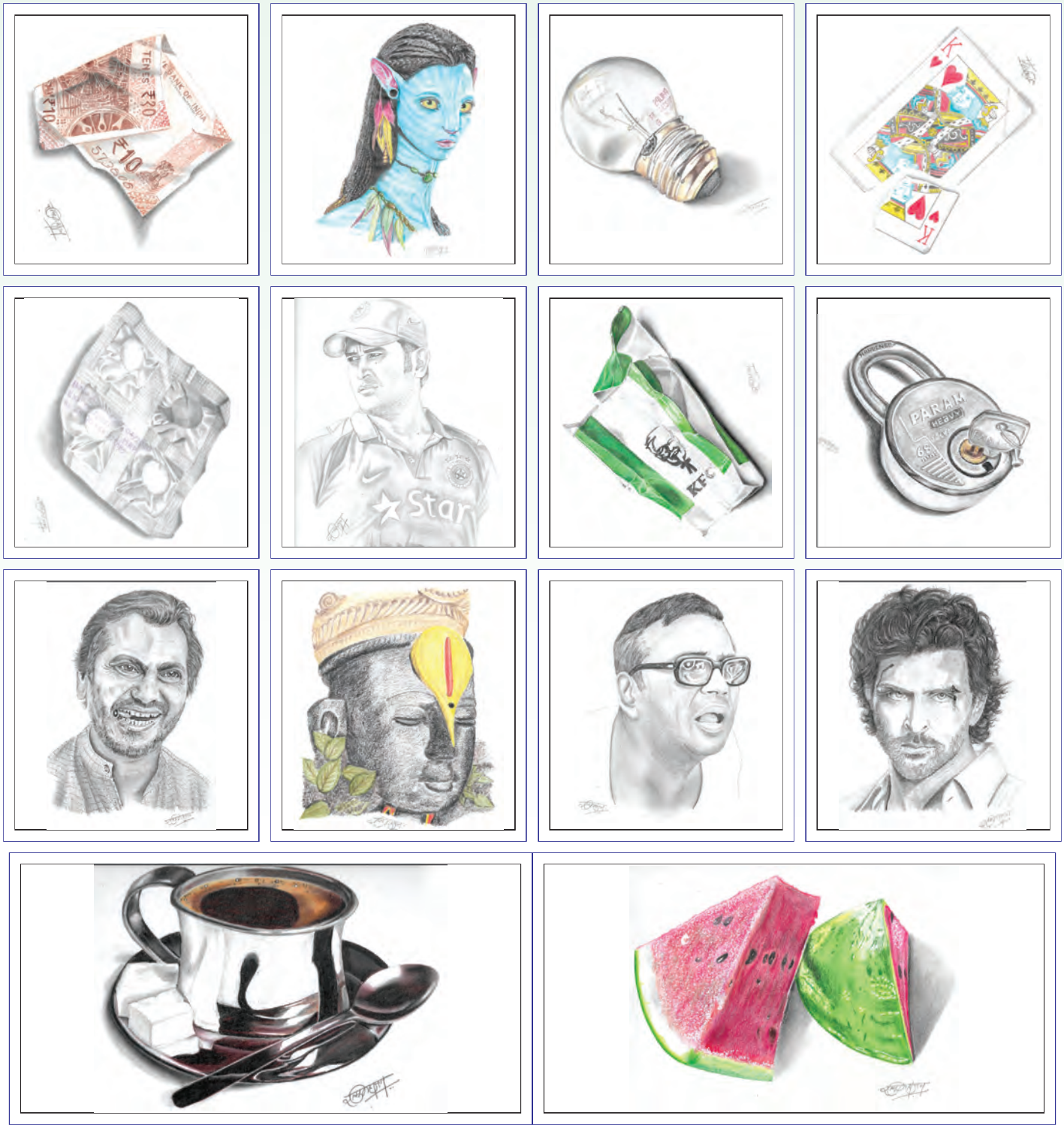

Paintings by Mast. Devavrat Prasad Rohom

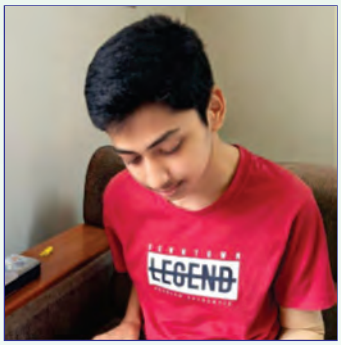

चि. देवव्रत प्रसाद रोहोम सिटी इंटरनॅशनल स्कुल, कोथरूड में नौंवी कक्षा मे पढता हैं । अपनी संस्था के एसडीएल विभाग मे कार्यरत श्री. प्रसाद रोहोम इनके ये चिरंजीव हैं । देवव्रत को निसर्ग चित्र और वाहनों की रेखाकृतियॉ बनाने का शौक बचपन से ही हैं । उसकी चित्रकृतीमें पर्सपेक्टीव और प्रमाणबध्दताकी खूबी नजर आती हैं ।

Coverpage Painting Done by Mast. Devavrat Prasad Rohom

Paintings by Ms. Pradnya Ghag, Purchase Dept.

3D Printed Frames by Mr. Rohan Sapkal, Purchase Dept.

3D Frames and Statues were 3D printed using PLA (Polylactic Acid or Polylactide), a thermoplastic derived from renewable resources like corn starch / sugarcane. PLA was stiffer than ABS, had a lower melting point, required less heat for printing and served as an environmentally friendlier alternative to petroleum-based plastics. We created a complete 3D printed frame of Bhagwan Narsimha with PLA material, which became visible with the help of light. The Bambu Lab A1 printer was used, achieving a minimum layer height of 80 microns.

Paintings by Mr. Ashish Walase, ARAI-HTC-FMCE

Paintings by Ms. Shreeya Shailesh Sonawane, D/o of Mr. Shailesh B. Sonawane

Ms. Shreeya is daughter of Dr. Shailesh B. Sonawane, Deputy General Manager, EDL. Shreeya is a bright and cheerful 10-year-old girl, who is currently in 5th standard. She loves spending her time on fun and creative activities. Her hobbies include drawing pictures, painting to make beautiful art, and reading interesting books. When she has free time, she enjoys doing all sorts of craft activities, like making things with paper to create fun projects. Shreeya's family supports her in exploring her interests and growing every day.

Paintings by Ms. Neeta Kulkarni, HRMA

Paintings by Mr. Aayush Jain, EDS

Sunflower installation using scrap materials collected from Indore Municipal Corporation's sweeper machines, repurposing broom bristles to form the petals for a unique texture and a strong message of sustainability. This project earned the title of "Recycling Hero" and reinforced the belief that waste could be transformed into meaningful art.

Crafted company logo using nails and woollen threads, involving precise alignment of nails and careful weaving of threads to bring out the design. This piece demonstrated how simple materials could be used creatively to produce professional and visually striking results.

Worked with nails and copper wire to capture the serene presence of "Acharya Shri Vidyasagar Ji Maharaj", using the contrast of metallic elements and fine detailing to create depth and expression in a unique way. This artwork represented both artistic experimentation and personal devotion.

कविता (हिंदी)

मेरा भारत देश महान

मेरा भारत देश महान
गाएँ हम जिसका गुणगान
विद्या का भंडार यहाँ हैं

लोक-नीति का सार यहाँ हैं
सभी कला में परिपूर्ण हैं
व्यापक हैं यह अनुपम हैं,

कहते हैं इस देश के आगे
सबने सिर को झुकाया हैं
झील, नदी और पर्वत भी
इसकी गाथा को गाया हैं,

वीर पुरुष से भरा पड़ा यह
मेरा देश मेरा समाज यह
इस धरती पर जन्म लिया हैं
राम, कृष्ण और बुद्ध भी

इस धरती पर जन्म लिया हैं
सीता और सावित्री भी,
मेरा भारत देश महान
गाएँ हम जिसका गुणगान।

कवि – कुमार संभव
राजभाषा अनुभाग

कविता (मराठी)

कविता आपलं मन ताजं करतात...
नव्या प्रेरणा देतात....
अंतरंग खरं राखायला मदत करतात...
संवेदना जागृत ठेवतात....

आपल्या कातडीची जाडी वाढणार नाही
याची काळजी घेतात...
कधी कधी आपली कातडी सोलूनही काढतात...

कवितेला सामोरं जाणं सोपं नसतं,
हे भान जागवितात.....
सहवेदना जाणवायला मदत करतात....

आपल्या बीजाशी संपर्क ठेवतात....
नव्या शक्यता दाखवतात...
अंकूराला आकार देतात....
अज्ञाताशी नातं जोडतात....

आपल्या अस्तित्वाला अर्थ देतात...
प्रदूषणापासून मनाला वाचवतात....
माणूसपणाला सांभाळतात....

कवि – मोहन निवृत्ती बागडे

कविता (मराठी)

पाऊस

आस सावळ्या नभाची
बरसेल तो बेभान
जणू त्याची तिची भेट
अन चिंब चिंब मन

पावसाच्या संथ धारा
वाटे शोधती निवारा
आणि आयुष्य दोघांचे
जणू थेंबाचा पसारा

पानं सारी झाली ओली
चिंब झाली थरारली
त्याचा मखमली स्पर्श
आणि शहारून गेली

वळणाच्या वाटेवरी
त्याच्या हाती हात तिचा
क्षण अवघा फुलला
ऊर भरल्या भेटीचा

रुणझुण वाऱ्यासंगे
खेळ रंगला स्वप्नांचा
मनी दोघांच्या रंगला
सारीपाट संसाराचा

@ निरती

कवि – आरती अलबूर सिन्नरकर

कविता (हिंदी)

चंद्रमा

सुना है चंद्रमा ।
तू किसी के बीच आने पर ।
ग्रसित होता है ।

तेरी निकटता हमसे
इतनी गहरी है ।
तुझ पर ग्रहण का
दाग लगने से ।
तू काला हो जाता है ।

तेरी ही छांव से हम
भी कलंकित होते हैं ।
तेरी पवित्रता के लिए ।
हम फिर से नहा लेते हैं ।
फिर से नहा लेते हैं ।

कवि – वृंदा पी. चक्रपाणी
ज्ञान केंद्र

कविता (हिंदी)

दौर

कुछ ना समझने से समझने का सफर कुछ और था
ना जाने कुछ सालों पेहले क्या दौर था
ऐ जिंदगी क्यों खामोशी से गुजर रही है
तुझे तो तूफानों से लड़ने का बड़ा शौक था ।।

बादलों में घिरी खामोशियों का वो दौर था
जज्बात अल्फाजों से निकलना आम तौर था
ऐं जिंदगी क्या शिकायत करूँ में तेरी
बनी हुई तक़दीर बदलने का तुझे भी बड़ा शौक था ।।

तक़दीर लिखनेवाला इस कदर क्यों खामोश था
मैं भी डट के ज़िन्दगी जीने की ओर था
ऐ जिंदगी क्या तारीफ करूँ मैं तेरी
बदली हुई चीज़ों को अपनाना भी मेरा शौक था ।।

वह दौर ही कुछ और था
वह दौर ही कुछ और था

कवि – कीर्ति दवे
पर्यावरण अनुसंधान प्रयोगशाला

कविता (मराठी)

का नाही कळले तुला

का नाही कळले तुला
माझी शाळा होतीस तू
माझी बाळा होतीस तू

का नाही कळले तुला
माझे कॉलेज होतीस तू
माझे नॉलेज होतीस तू

का नाही कळले तुला
माझा भास होतीस तू
माझा श्वास होतीस तू

का नाही कळले तुला
मी बनलो होतो तुझ्यासाठी
तू बनली होतीस माझ्यासाठी

का नाही कळले तुला
माझं आयुष्य होतीस तू
माझी खास होतीस तू

का नाही कळले तुला
का नाही कळले तुला

कवि – आशिष वाळसे
एआरएआई-एचटीसी-एफएमसीई

भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा सितंबर, २०२५ में आयोजित हिंदी पखवाड़ा में एआरएआई कर्मियों को प्राप्त पुरस्कार

भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा सितंबर, २०२५ में 'हिंदी पखवाड़ा' के अवसर पर विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं का आजोजन किया गया। जिसमें भारी उद्योग मंत्रालय के सीपीएसई/ स्वायत्त निकायों को भी भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया।

एआरएआई से उक्त प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सभी कर्मचारियों को परिपत्र परिचालित किया गया, जिसके उत्तर में एआरएआई से दो कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

भारी उद्योग मंत्रालय के स्तर पर कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच दिनांक २६ सितंबर २०२५ को इन प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किए गए। 'तकनीकी लेख लेखन श्रेणी' में एआरएआई अकादमी से दो कार्मिकों की प्रविष्टियों को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुए। मंत्रालय स्तर पर प्रतिष्ठित पुरस्कार के रूप में यह उपलब्धि न केवल एआरएआई की सक्रियता और उद्यमिता की उत्कृष्टता प्रदर्शित करती हैं, बल्कि समस्त एआरएआई परिवार को गौरवान्वित करता हैं।

पुरस्कार विजेता कार्मिक हैं

श्री. आत्मेश जैन – एआरएआई अकादमी

– प्रथम पुरस्कार –

तकनीकी लेख लेखन श्रेणी

पुरस्कार राशि – रु. ५०००/–

डॉ. योगेश भटेश्वर – एआरएआई अकादमी

– द्वितीय पुरस्कार –

तकनीकी लेख लेखन श्रेणी

पुरस्कार राशि – रु. ३०००/–

Retired Employees

Mr. N. B. Dalwai
Sr. Technical Assistant, SDL

Mr. Ujjwal B. Gadhave
Deputy Manager, SDL

Mr. Atul Bhide
Deputy Director, F&A

New Employees

Mr. AYUSH JAIN
EDS

Mr. V. S. KULKARNI
EDS

Mr. V. B. DESHMUKH
HTC-FMCE

Mr. D. D. NAGANE
HTC-AED

Mr. A. P. JAGTAP
HTC-AED

Mr. N. RAMESH
CHE-VEL

Mr. M. G. SHINGADE
HTC-ECL

Mr. G. S. TIWAREKAR
AED

Empowering Employees' Families with Notebooks and Stationery Vouchers

At ARAI, we demonstrated our commitment to supporting the growth and development of our employees' families through our Employees Welfare Initiative by distributing notebooks and stationery vouchers to all the wards of ARAI employees. This thoughtful gesture aimed to encourage the young ones to pursue their dreams, reflecting our dedication to fostering a culture of learning and empowerment. We were proud to be part of our employees' journey and grateful for their continued association with the ARAI family.

एआरएआई ने गर्व और देशभक्ति के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया

स्वतंत्रता दिवस पर एआरएआई पुणे केंपस गर्व और देशभक्ति से भर गया। इस खास मौके पर, एआरएआई के निदेशक डॉ. रेजी मथाई ने आत्मनिर्भर भारत को आगे बढ़ाने और विकसित भारत के रूप में भारत के पूरे विकास में एआरएआई की अहम भूमिका पर ज़ोर दिया। संगठन ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ

HAPPY INDEPENDENCE DAY

भगवान बिरसा मुंडा की १५०वीं जयंती के अवसर पर एआरएआई द्वारा जनजातीय विरासत पर विशेषज्ञ वार्ता का आयोजन

जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की १५०वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित जनजातीय गौरव वर्ष (जेजेजीवी) समारोह के भाग के रूप में, ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एआरएआई) ने ३ अक्टूबर २०२५ को जनजातीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जनजातीय कला, संस्कृति, विरासत और इतिहास को प्रोत्साहन देने वाली एक विशेषज्ञ वार्ता का आयोजन किया। आमंत्रित विशेषज्ञ श्री बालाजी बाबूराव कांबले, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के मानव विज्ञान विभाग में शोध सहायक एवं शोधार्थी, ने एक अत्यंत जानकारीपूर्ण और विचारोत्तेजक सत्र प्रस्तुत किया, जो एआरएआई के सतत गतिशीलता दृष्टिकोण के साथ पूर्णतः संरेखित था।

हिंदी पखवाड़ा – २०२५

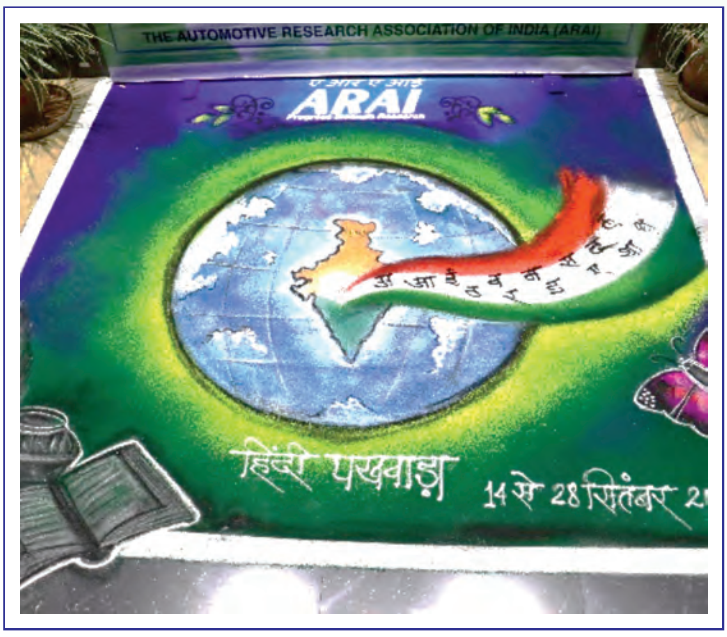

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एआरएआई प्रति वर्ष हिंदी पखवाड़ा का आयोजन करता हैं। इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा- 2025 का आयोजन एआरएआई में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2025 अवधि में उत्साह व जोश के साथ किया गया।

हिंदी पखवाड़ा- 2025 के अवसर पर निदेशक, एआरएआई, सभी विभागाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य, मानव संसाधन प्रबंधन एवं प्रशासन के पदाधिकारियों ने सामुहिक रूप से ''राजभाषा प्रतिज्ञा'' ली और राजभाषा के प्रति अपने संकल्पों को दोहराया। पखवाड़ा अवधि में विविध प्रतियोगिताओं और एक तकनीकी वार्ता का आयोजन किया जिनमें प्रतिभागियों की प्रतिभागिता बहुत ही उत्साहजनक रही।

28 सितंबर, 2025 को हिंदी पखवाड़ा-2025 का समापन हुआ। सभी प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों / उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य पूर्ण होते ही परिणामों की घोषणा और कार्यक्रम के माध्यम से विजेता प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया जायेगा और पुरस्कृत किया जायेगा।

हिंदी पखवाड़ा-२०२५ की गतिविधियाँ

क्र. सं.	दिनांक व दिवस	प्रतियोगिता	विवरण
१	१४ सितंबर २०२५	हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से प्राप्त निदेशों के अनुसार कार्यालय में दिनांक १४ सितंबर (हिंदी दिवस) के अवसर पर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हुआ। १८ सितंबर, २०२५ को निदेशक, एआरएआई, सभी विभागाध्यक्ष, और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य ''राजभाषा प्रतिज्ञा'' के साथ राजभाषा कार्यान्वयन का संकल्प लिया। सभी विभागों ने अपने-अपने विभाग में ''राजभाषा प्रतिज्ञा'' ली।
२	१७ सितंबर २०२५	विडियो चित्रीकरण प्रतियोगिता (प्राकृतिक/ ऐतिहासिक/ सांस्कृतिक स्थल)	पुणे शहर में और आसपास, अनेक प्राकृतिक/ ऐतिहासिक/सांस्कृतिक स्थल हैं, प्रतिभागियों ने अपने पंसदीदा स्थल का भ्रमण दिनांक १४-०९-२०२५ से १७-०९-२०२५ के बीच किया और अपने इस भ्रमण का ०२ मिनट अवधि का विडियो हिंदी में बनाया जिसमें उस स्थल का विवरण, महत्व का ब्यौरा दिया गया। ये विडियो हमारी सांस्कृतिक विरासत और धरोहरों का महत्व पर प्रकाश डालते हुए लोगों को इन स्थलों का भ्रमण करने के लिए प्रेरित करते हैं।
३	१८ सितंबर २०२५	चित्र के आधार पर कहानी और रचनात्मक लेखन	एक चित्र सुबह ९.३० प्रसारित किया गया जिसके आधार प्रतिभागियों ने अपने विचारों को रचनात्मक तरीके से लिखकर अपनी लेखन और कल्पनाशीलता का परिचय दिया। इसमें प्रतिभागियों ने बड़ी संख्या में प्रतिभागिता की।
४	१९ सितंबर २०२५	हिंदी प्रश्नोत्तरी	प्रतिभागियों को एक एमएस टीम्स फॉर्म के माध्यम से एक ऑनलाइन हिंदी प्रश्नावली परिचालित की गई जिसमें प्रतिभागियों ने भाग लिया।
५	२२ सितंबर २०२५	शब्द खजाने की खोज प्रतियोगिता	हमारे ज्ञान केंद्र (पुस्तकालय) विभाग में हिंदी और क्षेत्रीय भाषा (मराठी) का एक कक्ष बनाया गया हैं। इस कक्ष में हिंदी और मराठी पुस्तकें उपलब्ध हैं। प्रतिभागियों को एक प्रश्नावली सुबह ९.३० प्रसारित की गई जिनके उत्तर इन पुस्तकों से खोज कर अप. ४.०० बजे तकउत्तर प्रस्तुत किए गए।

हिंदी पखवाड़ा-२०२५ की गतिविधियाँ

क्र. सं.	दिनांक व दिवस	प्रतियोगिता	विवरण
६	२३ सितंबर २०२५	तकनीकी संगोष्ठी	१. ''ई२०- एक ईंधन विकल्प''- डॉ. एस.एस. ठिपसे, वरिष्ठ उपनिदेशक, ईडीएल २. ''डाटा प्रबंधन''- श्री राजेन्द्र डी. तळेले, उपनिदेशक, आईटीएम ३. ''ऑटोमोटिव अनुप्रयोगों के लिए बैटरी इंजीनियरिंग''- डॉ. योगेश भटेश्वर, उपमहाप्रबंधक, अकादमी इन विषयों पर बेहद ज्ञानवर्धक और एआरएआई की भूमिका की जानकारी संजोए तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन बहुत सफल रहा।
७	२४ सितंबर २०२५	घोष वाक्य/ ब्रीद वाक्य प्रतियोगिता	प्रतिभागियों को एक विषयः पर्यावरण सुबह ९.३० प्रसारित किया गया, जिस पर प्रतिभागियों ने रचानात्मक घोष वाक्य/ ब्रीद वाक्य लिखकर दोपहर ४.०० बजे तक प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता के माध्यम से अनेक आकर्षक घोष वाक्य प्राप्त हुए।
८	२५ सितंबर २०२५	हिंदी अनुवाद सह टंकण	एक अनुच्छेद सुबह ९.३० प्रसारित किया गया जिसका प्रतिभागियों ने अनुवाद और टंकण करके को अप. २.०० बजे तकअपनी प्रविष्टि प्रस्तुत कीं।
		विभागीय गतिविधि प्रस्तुतीकरण	एआरएआई के प्रत्येक विभाग द्वारा अपने विभाग के कार्य और भविष्य की योजना पर ०५ मिनट अवधि का प्रस्तुतीकरण हिंदी में टीम्स माध्यम से ऑनलाइन किया गया। इसमें कुल २७ विभागों ने अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत कीं। सभी प्रस्तुतियां विभागों के गतिविधियों और नई पहलों की जानकारियों से सजी हुई थी। यह एक बहुत ही सफल प्रतियोगिता रहीं।
९	२६ सितंबर २०२५	हिंदी निबंध प्रतियोगिता और हिंदी कविता प्रतियोगिता	प्रतिभागियों के रचनात्मक लेखन और कल्पनाशीलता को एक मंच देने के रूप में निम्नलिखित विषयों पर क्रमशः हिंदी निबंध और हिंदी कविता लेखन का आयोजन किया गया- हिंदी निबंध लेखन के विषयः १. आत्म-निर्भर भारत २. सड़क सुरक्षा हिंदी कविता लेखन के विषयः १. 'परिवर्तन' २. 'मित्रता'

निदेशक, एआरएआई, विभागाध्यक्षों,राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्यों और मानव संसाधन प्रबंधन एवं प्रशासन के पदाधिकारियों द्वारा 'राजभाषा प्रतिज्ञा'

हिंदी पखवाड़ा–2025 की झलकियाँ

विभागीय प्रस्तुति प्रतियोगिता की एक झलक

विभागीय प्रस्तुति प्रतियोगिता की एक झलक

शब्द खजाने की खोज
प्रतियोगिता–प्रतिभागियों का प्रथम लॉट

तकनीकी वार्ता की एक झलक

ARAI Participates in Swachhata Pakhwada for a Cleaner Future : Swachhata Pakhwada 2025

ARAI enthusiastically participated in Swachhata Pakhwada to promote sustainability and civic responsibility, organizing various activities from 16th to 31st August 2025. These initiatives successfully created awareness and engaged employees in efforts to foster greener and healthier environment, contributing to a cleaner tomorrow. It aimed to promote cleanliness, hygiene and environmental sustainability in line with the directives of Ministry of Heavy Industries. Activities included awareness drives, competitions, inspections, clean-ups and training to foster a productive, safe and eco-friendly workplace.

Detailed action plan was prepared based on the directives of MHI and VC meetings. Key activities where organized for a period of 16 days, focusing on cleanliness, waste management and employee engagement across ARAI locations (Kothrud, FID, Takawe, HTC).

Day 1 (16.08.2025): Official launch of Swachhata Pakhwada by Director Dr. Reji Mathai. Banners displayed at all the locations and social media post shared for wider engagement.

Day 2 (18.08.2025): Employees took Swachhata Oath; Director's Address emphasized commitment; overview by Shri P. P. Dambal.

Day 3 (19.08.2025): CFT conducted housekeeping inspection at Kothrud, focusing on ETP, STP, waste zones, gardens and vegetation; recommended sustainable practices.

Day 4 (20.08.2025): Shramadan for Housekeeping at FID; Tree Plantation at ARAI-MRC, Takawe to enhance green cover.

Day 5 (21.08.2025): Launch of digital reporting form for Housekeeping issues to ensure timely resolutions and promote responsibility.

Day 6 (22.08.2025): Awareness training on 5S (Sort, Set in Order, Shine, Standardize, Sustain) by Mr. H. B. Chavan, covering implementation and benefits like productivity, safety and morale.

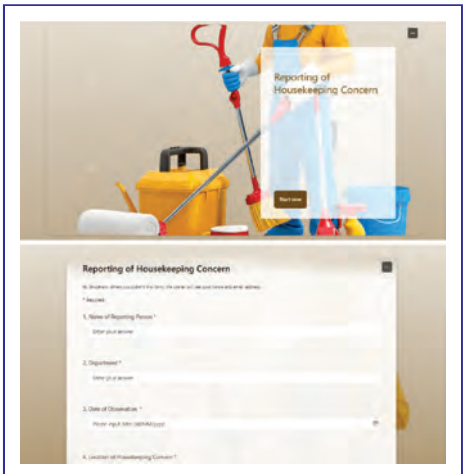

Day 7-8 (23-24.08.2025): Poster and slogan competitions with home-based participation to promote creative awareness on cleanliness

Day 9 (25.08.2025): Disposal of wooden waste/scrap by Stores Department, emphasizing sustainable practices.

Day 10 (26.08.2025): Shramadan at ARAI-HTC with the employees cleaning ~200 sqm, focusing on waste removal and teamwork.

Before	After	Before	After

Day 11 (28.08.2025): Clearance of identified hotspots at Kothrud; review and disposal of 2350 obsolete records/files via shredding.

Before	After	Before	After
		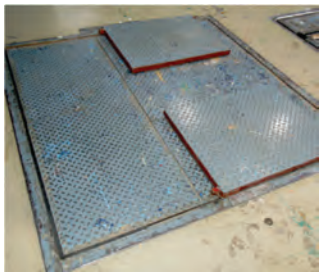	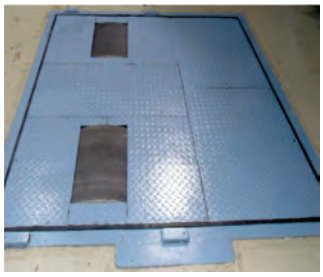

Before	After	Before	After

Day 12 (29.08.2025): Felicitation of volunteers; awards for poster/slogan winners using eco-friendly bamboo prizes.

Swachhata Pakhwada 2025 successfully promoted cleanliness, environmental stewardship and employee engagement through diverse activities. It reinforced ARAI's commitment to sustainability, with initiatives like digital reporting and 5S training ensuring long-term hygiene and efficiency. Eco-friendly practices, such as bamboo awards, highlighted the drive towards reducing use of plastic. The event fostered the culture of responsibility, teamwork and civic duty across all the ARAI Centers.

Special Campaign 5.0: Mutual Visit of Officials from BHEL, Hyderabad and ARAI, Pune

On 10th October, 2025, Shri T. Harish Babu, a Senior Manager at Bharat Heavy Electricals Limited (BHEL), Hyderabad, made an official visit to the ARAI. This visit was part of the ongoing Special Campaign 5.0, a nationwide initiative aimed at promoting cleanliness, organizational efficiency, and sustainable practices across various sectors in India. The campaign, often aligned with broader government efforts like Swachh Bharat Mission, focuses on decluttering workspaces, improving hygiene standards, and fostering a culture of responsibility among employees and stakeholders.

Shri Babu's conducted a thorough assessment of the designated areas at ARAI that had been earmarked for intensive cleaning and maintenance activities. By inspecting these zones firsthand, he aimed to ensure that the preparatory work aligned with the campaign's objectives, which include reducing waste, enhancing safety, and creating a more productive environment. Additionally, the visit served as a platform to facilitate better coordination between the teams from BHEL and ARAI. This involved discussing workflows, sharing best practices, and addressing potential challenges in executing the campaign effectively, thereby strengthening inter-organizational collaboration.

BHEL demonstrated its dedication to not only meeting compliance standards but also contributing to broader societal benefits, such as environmental conservation and improved workplace morale. The visit concluded with agreements on follow-up actions, including joint training sessions and progress monitoring, ensuring that the momentum of the campaign continues beyond this interaction. Overall, this mutual exchange highlights the importance of partnerships in achieving sustainable development and operational excellence.

Shri. R.D. Sawant, Sr. Manager,
Shri. T. Harish Babu, Sr. Manager, BHEL Hyderabad,
Shri. M. R. Pathak, Deputy Director,
Shri R.S. Kulkarni, General Manager,
Dr. A Madhav. Rao, Sr. Manager,
and Shri S. S. Malwade,
Research Engineer, EHS (from left to right)

Sri N. Vijaya Sagar, General Manager (M&S)
& Factory Manager;
Sri K. Arvind Kumar, SDGM (HSE);
Mr. T. Harish Babu, Senior Manager (Safety);
Mr. B. Parashuram, Senior Manager (Safety);
and Mr. Balakrishna Saini,
Deputy Manager (Safety) – rightmost.

Waste to Art - A Success Story

The 'Swachhata Hi Seva' (SHS) campaign, observed annually since 2017, strengthens voluntarism and collective action for cleanliness through a 'Whole of Society' and 'Whole of Government' approach, uniting citizens, institutions and leaders across levels, with growing scale and impact over time. This year's theme, 'Swachhotsav', aligns with the festive season, celebrating cleanliness as a cultural event. As per the directives of Ministry of Housing and Urban Affairs (MoHUA) and Department of Drinking Water and Sanitation (DDWS) and guidance of Dr. Reji Mathai, Director ARAI and Mr. V. A. Pankhawala, Sr. Deputy Director, ARAI's Sustainability Group organized inter Departmental "Waste to Art" competition from 18th to 30th September 2025.

Infrastructural Development (ID) – Boat

This boat is made from waste materials. It shows how old things can become meaningful art. It stands for building strong and flexible infrastructure. Just like a boat sails through changing waters and keeps people safe, this decoration teaches us that development should be thoughtful, adaptable and kind to the environment. It is a creative way to show how waste can share a powerful story of progress.

The waste materials used include scrap wood from pallet boxes, wooden pieces, metal bars, binding wire flexible rubber pipes, electric wires, and a bulb. New materials added are one flex banner, water-based color, a cotton flag, and a tarpaulin sheet. It took about 18 hours to make the boat. After use, it will be reused for other events and then disposed off by authorized recyclers.

Finance & Accounts (F&A) - Tree from Waste Papers

This tree is made from waste paper. It teaches us that creativity and caring for the environment can work together. It shows how simple, everyday materials can be reused to make something meaningful and beautiful. This art encourages us to think differently about waste. It reminds us that small efforts can bring big changes in protecting nature.

The waste materials used include wooden sticks (3/4 pieces), metal wire (3 meters), newspaper (1 kg), an earthen pot (1 piece), and clay (4 kg). New materials added are card sheet, kaav (red oxide) and tissue paper. It took about 7 hours to make the tree. After use, it can be easily taken apart and its parts can be reused or recycled, keeping its eco-friendly cycle going.

PMD - Lord Ganesh Murti from Metal Waste

This Ganesh Murti is made from metal waste. It shows how old fire extinguisher cylinders can be reused to create something beautiful. It helps protect the environment by encouraging recycling. It proves that even thrown-away items can become meaningful art. Though it may not be as perfect as professionally made idols, it is a smart and thoughtful way to honor Lord Ganesh and nature at the same time.

The waste material used is metal from scrapped fire extinguishers. About 10 kg, materials used from 4 discarded fire extinguisher cylinders. No new materials is used for this. It took about 5 hours to make the idol. Installed at safe place in the department.

Structural Dynamics Laboratory (SDL) - Shiv Mandir

This Shiv Mandir is made from waste materials. It shows how old and unused items can become beautiful art. It has symbols of Lord Shiva, like the Shivling, Nandi, Trishul and snake designs. This temple teaches us to care for nature while honoring our faith. It proves that even waste can be used to create something sacred and meaningful.

The waste materials used include a mild steel structure, PU foam from packaging, tested components, LAN cable wires, floor grass mats, decoration leaves, discarded soft drink bottles, LED lights from old digital meters and scooter brake cables from two-wheelers. New materials added are water colors and PVC flex. It took about 30 to 40 hours to make the temple. After use, it will be reused for future events or disposed off through scientifically approved methods to keep the environment safe.

Engine Development Department (EDL) - "Make in India Lion"

The lion is made from scrap engine parts. It stands for creativity, strength and national pride. It shows how old machine parts like gears pistons and pipes can be reused to make powerful art. This sculpture teaches us that waste can become valuable and inspiring. It encourages recycling, innovation and the "Make in India" spirit.

The waste materials used are gears and pulleys, pistons, fuel injection pumps, connecting rods, EGR unit and pipes, push rods and valves, clutch plates, cam shafts, bearings, exhaust pipes, injectors and high-pressure pipes, chains, bolts, nuts, washers and springs—all from scrap engine and automotive parts. Used 180 kg of these scrap parts. New materials added are 5 kg of welding electrodes and 2 liters of paint and finishing coat. It took about 25 hours to make the lion. It is built to last long, so it can be permanent display.

Knowledge Centre-Library (KC) - Photo Gallery Frame & Flower Pots

This creative artwork shows how everyday waste, like old boxes, calendars, and flower pots, can be reused to make something useful and beautiful. It encourages us to think differently about waste and inspires eco-friendly habits. By turning simple materials into art, it spreads awareness about sustainability. It reminds us that small changes can help protect the environment.

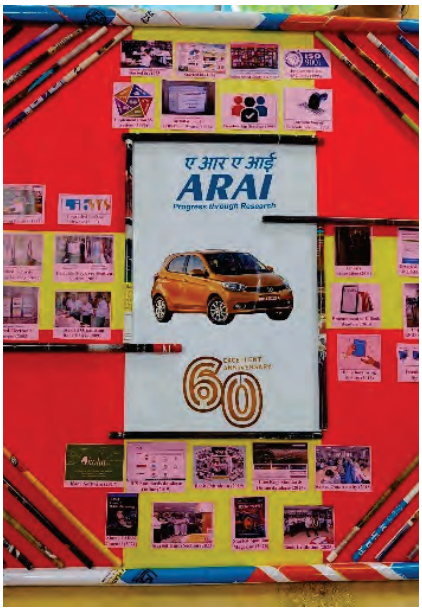

The waste materials used include old packing boxes, color papers, unused pins, old flower pots and old calendars. We used cardboards from old boxes (2 pieces), unused color papers (4 pieces), 100g of gum, 20 pins, old calendar papers (10 pieces), color papers (2 pieces), and 50g of gum. No new materials were used; the artwork was made entirely from the used items. It took about 4 hours to create. It is a permanently displayed in the library.

FID-Passive Safety Laboratory (PSL) - Navnirmiti Vighnaharta

Navnirmiti Vighnaharta is a creative Ganesh idol made from industrial scrap. It shows how waste can be turned into something meaningful. It stands as a symbol of innovation, eco-friendliness and respect for nature. This artwork encourages us to think differently about waste. It inspires everyone to adopt greener and more responsible practices in daily life.

The waste material used is M. S. Bright Bar, SAE 1008, CHQ, 6 mm diameter. We used 4 to 5 bending cut bars. No new materials were added; the idol was created entirely from repurposed items. It took about 4 hours to make. After use, it is a permanent artefact in office or lab, serving as a symbol of Waste-to-Wonder.

Environment Research Laboratory (ERL) - Air Attack – ERL vs Air Pollutants

Artefact is a fun game-inspired creation, similar to Angry Birds. In this creative, pigs stand for air pollutants and smiley paper balls represent our ERL lab initiative. These balls target and knock down the pollutants. The setup is interactive and helps people learn about air pollution and its impact. It also shows how we can creatively reuse waste materials.

Used waste cartons and smiley paper balls as main materials. Specifically, reused 900 waste cartons. For new materials, we added 50 fresh paper, plus glue and tape. It took about 4 hours to make the artefact. After the use it will be recycled.

Vigilance Awareness Campaign (सतर्कता जागरूकता अभियान) & Vigilance Awareness Week 2025 (सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025)

ARAI undertake a three month Vigilance Awareness Campaign between 18th August to 17th November 2025, as a prelude to the Vigilance Awareness Week 2025. ARAI inaugurated Vigilance Awareness Week 2025 from 27th October to 2nd November 2025 in the presence of Heads of Departments, Department in-Charges and senior executives with others joined via Teams Network. The event included taking Integrity E-pledge on the CVC website, advise to all employees and customers, along with a Vigilance Awareness Quiz, elocution competition and competitions in drawing and essay writing. As a part of the campaign, Mr. Shyam Babu Kashyap of HRMA gave a presentation on "Vigilance: Our Shared Responsibility **"सतर्कताः हमारी साझा जिम्मेदारी"** through a Teams session, emphasizing shared responsibility in promoting integrity and awareness.

Address by Director

Pledge Taking

Lighting of Lamp

Pledge Taking at Departments

Elocution

Quiz

Drawing

Drawing Competition (Category : Family Members of Employees):
Winner 1 : Ms. Nirvi R. Wani D/O Rupesh M. Wani

Drawing Competition : (Category : Family Members of Employees): Winner-2 :
Sumit S. Mhalunkar: S/O Suresh A. Mhalunkar

Talk by Shri Hemant Lokhande & Shivram Sohani
"Business Ethics – Due Diligence"
(10th October 2025)

Presentation by Shri Shyam Babu Kashyap on
"Vigilance: Our Shared Responsibility"
(31st October 2025)

Under Capacity Building Program, one day Training arranged on "Investigation & Report, Framing of Charge sheet, Conducting CTE type Intensive Examination" by Shri Ram Prakash Sejwal, New Delhi on 30th September 2025.

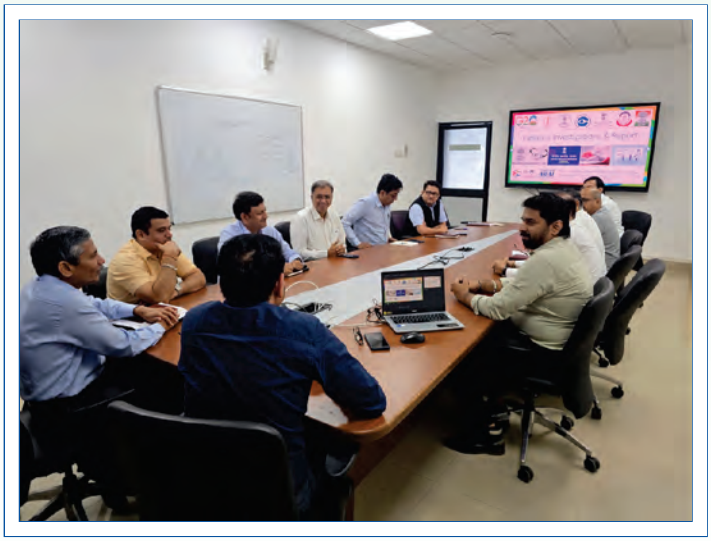

सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत एआरएआई द्वारा कोथरुड, पुणे स्थित परांजपे विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए सतर्कता सत्र का आयोजन

केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार एआरएआई में डॉ. नागेश एच. वाळके, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं वरिष्ठ उप निदेशक के नेतृत्व में दिनांक 18 अगस्त 2025 से 17 नवंबर 2025 तक निवारक सतर्कता पर केंद्रित जागरुकता अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत 27 अक्टूबर 2025 से 2 नवंबर 2025 की अवधि में सतर्कताः हमारी साझा जिम्मेदारी थीम के साथ सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2025 का आयोजन किया गया तथा इस क्रम में, श्री राहुल माने, वरिष्ठ प्रबंधक, एनवीएच के योजना अनुसार कोथरुड, पुणे स्थित परांजपे विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए दिनांक 12 नवंबर 2025 को एक सतर्कता सत्र का आयोजन किया गया।

इस जागरुकता सत्र में एआरएआई की ओर से डॉ. महेश एम. खुरसाळे, प्रबंधक, क्रय विभाग और श्री श्याम बाबू कश्यप, राजभाषा अधिकारी, मानव संसाधान प्रबंधन एवं प्रशासन ने भारत सरकार के राष्ट्रीय लक्ष्य- विकसित भारत के लिए एआरएआई की भूमिका और कार्यों, सेवाओं और नव-प्रवर्तनों की जानकारी के साथ सतर्कताः हमारी साझा जिम्मेदारी थीम के अनुरूप विकसित भारत में बच्चों और युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समय की जागरुकता आवश्यकताओं और चुनौतियों पर विद्यार्थियों के साथ सरल और सहज संवाद के माध्यम से सतर्कता जागरुकता के संदेश, विचार और जानकारी को विद्याथियों को साझा किया। पूर्वाह्न और अपराह्न के सत्रों में लगभग 400 बालक-बालिकाओं ने सक्रियता से भाग लिया। इन सत्रों में विद्यार्थियों ने स्वच्छंद रूप से बाल-मन शंकाओं, प्रश्नों और जिज्ञासाओं को रखा जिनका समाधान डॉ. महेश एम. खुरसाळे और श्री. श्याम बाबू कश्यप ने विस्तार से सहज रूप में विद्यार्थियों को साझा किया। प्रश्नकर्ता और उत्तरकर्ता विद्यार्थियों को बॉलपेन उपहार प्रोत्साहन स्वरूप प्रदान किए। विद्यार्थियों ने जागरुकता सत्र का भरपूर आनंद लिया और अपना ज्ञानवर्धन किया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की मुख्याध्यापिका सुश्री स्मिता रांजेकर से सतर्कता जागरुकता विषय पर शिष्टाचार भेंट और विचार-विमर्श हुआ।

एआरएआई ने 7 नवंबर, 2025 को वंदे मातरम मनाया

एआरएआई ने 7 नवंबर, 2025 को वंदे मातरम स्मरणोत्सव मनाया, जिसमें भारत के राष्ट्रीय गीत और स्वतंत्रता संग्राम में इसके महत्व को सम्मानित किया गया। इसने राष्ट्र की प्रगति के लिए गर्व और सामूहिक प्रगति की भावना को बढ़ावा देने के लिए एआरएआई की प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया।

एआरएआई ने संविधान दिवस मनाया

एआरएआई ने २६ नवंबर, २०२५ को पूरे उत्साह के साथ संविधान दिवस मनाया, जो १९४९ में भारत के संविधान को अपनाने की याद में मनाया जाता हैं। कर्मचारियों ने एक गंभीर शपथ ग्रहण समारोह में हिस्सा लिया। एआरएआई के नेतृत्व में लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने, एकता की भावना को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता में नवाचार और नैतिक प्रथाओं की भूमिका पर ज़ोर दिया। इस आयोजन ने भारत के ऑटोमोटिव क्षेत्र में योगदान देने के प्रति एआरएआई के समर्पण को और मज़बूत किया, साथ ही देश के संवैधानिक आदर्शों के साथ तालमेल बिठाया।

ARAI's 59th Annual Day

ARAI celebrated its 59th Annual Day on 10th December 2025, marking a significant milestone as the organization steps into its 60th year of dedicated service to India's automotive industry. With great enthusiasm, ARAI kicked off its Diamond Jubilee celebrations, honoring six decades of innovation, safety advancements and contributions to road transport. event featured the unveiling of a special ARAI@60-year logo, symbolizing organization's enduring commitment to excellence and future progress in shaping a safer, more sustainable mobility landscape for all. Additionally, the occasion was made even more memorable with the distribution of awards and prizes to its employees, recognizing their outstanding performances in various competitions that showcased creativity, teamwork and dedication across different domains.

ARAI

ARAI

ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

ARAI
The Automotive Research Association of India
ANNUAL DAY

ARAI
Progress through Research

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

Progress through Research

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research

ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

ए आर ए आई
ARAI

ARAI
The Automotive Research Association of India

ए आर ए आई
ARAI

ए आर ए आई
ARAI
The Automotive Research Association of India

ए आर ए आई
ARAI
The Automotive Research Association of India

ए आर ए आई
ARAI

ए आर ए आई
ARAI

CATEGORY:ARAI Model Employee
2025 :

CATEGORY:ARAI Model Employee
2025 :

Progress through Research
The Automotive Research Association of India

2025 :
(L11–L12C Category)

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research

CATEGORY:ARAI Model Employee
2025 :

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research

CATEGORY:ARAI Model Employee
2025 :

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research
The Automotive Research Association of India

Community Outreach and Celebrations : ARAI's Spirit of Giving

In a heartwarming display of compassion, SRSG Group, (along with the representatives of ARAI Employees Union) and staff, visited three NGOs in Pune area. They distributed caps, T-shirts, shoulder bags and housekeeping materials to the needy children. They visited Aniket Sevabhavi Sanstha in Mulshi and Gurukrupa Gurukul Sanstha in Kolvan on 1st July 2025 and Mauli Anathashram Niradhar Seva Sanstha Trust in Bhor on 11th July 2025. These gestures brought smiles and much-needed support to the young children.

Aniket Sevabhavi Sanstha, Mulshi, Visit on 1st July 2025.

Gurukrupa Gurukul Sanstha, Kolvan, Visit On 1st July 2025

Mauli Anathashram Niradhar Seva Sansta Trust, Bhor, Visit on 11th July 2025

Building on this spirit, members and children from Mauli Anathashram Niradhar Seva Sanstha Trust in Bhor were invited to ARAI for the Ganesh Festival celebrations on 29th August 2025. The ARAI Ganesh Mandal donated Rs. 25,000 to support their well-being and gifted each child a handbag and stationery items. It was a joyful occasion that strengthened bonds and spread festive cheer.

On the eve of Dussehra, during the ninth day of Navratri, the SRSG Group and ARAI Union members celebrated Khande Navami with great enthusiasm and religious fervor. The event highlighted their commitment to cultural traditions and community unity.

On the eve of Dussehra, during the nineth day of Navratri, the SRSG Group and ARAI Employees Union members celebrated Khande Navami with great enthusiasm and religious fervor. The event highlighted their commitment to cultural traditions and community unity.

Interview of Mr. J.V. Bhalerao, Sr. General Manager – ARAI by Dr. A. Madhava Rao

Background and Early Days

Can you share a bit about your background and what led you to join ARAI?

I was born in Amravati in Vidarbha region of Maharashtra in 1966. I completed my schooling in Wani in Yavatmal district. My parents were school teachers and guided me to pursue engineering. I completed my B.E. (Civil Engineering) in 1989 from Nagpur University and was started career with Bajaj Auto Ltd. The expansion of the automotive industry and my interest in being associated with it led me to join ARAI-FID in 1997.

What were your initial roles and responsibilities when you first started?

When I first started at ARAI in 1997, my main job was to set up Forging Industry Division at Chakan. This means I had to plan and organize everything from the ground up and getting the necessary equipment. I also handled paperwork, like getting approvals from the higher authorities and setting up. It was a big task because the division was new and I had to make sure to fit it into Forging goals for the automotive industry. This role taught me a lot about starting something new and dealing with challenges like coordinating with different teams.

Career Journey

How has your role evolved over the years at ARAI?

I was initially associated with establishment of the Forging Industry Division at Chakan. After completing the project, I was shifted to ARAI-Kothrud in IMPC Department to establish Inspection and Certification centers across India, which was sponsored by MoRTH.

What are some of the most significant projects or initiatives you have been a part of?

One of the biggest projects I worked on was setting up Inspection and Certification centers across India. This started as a pilot project sponsored by the Ministry of Road Transport and Highways (MoRTH). My team and I travelled to different states to build these centers, of auto inspection of vehicles for safety and fitness. We began with a small group and grew it into a network that now we are in process of establishing over 50 Automated Testing Stations (ATS) in Maharashtra it self. This project helped ARAI expand its business and led to rules for phasing out old or unsafe vehicles at the end of their life. These efforts made a real difference by improving vehicle standards and creating jobs in the industry.

Memorable Experiences

What are some of your most memorable experiences during your time at ARAI?

One of my most memorable experiences was helping to establish the first Inspection and Certification (I&C) center at Nashik. It was exciting to be a part of something new in India and I worked closely with local officials and contractors to make it happen. We faced challenges like acceptance from the local people at the testing center and testing of old vehicles, but seeing the center open and start testing vehicles was rewarding. Another highlight was traveling to different states for projects, which let me learn about various cultures and ways of working. These trips were not just work; they built lasting friendships and showed me how teamwork across regions can lead to success. Overall, these experiences made my time at ARAI feel like a journey of growth and discovery.

How has your career with this organization impacted your life outside of work?

During the execution of projects, I had the opportunity to interact and work with Government officials. Interacting with them taught me ways of thinking. For example, I learned how people in one state might approach problems differently from those in another, which made me more open-minded and adaptable in my daily life.

These experiences also helped me build lasting friendships and broader perspective on India as a

whole. Outside of work, this has made me appreciate diversity and enjoy sharing stories with my family and friends. Overall, it has made me all-rounded person, not just professionally, but in how I connect with the world around me.

Contributions and Achievements

How do you feel your work has impacted the organization and the industry as a whole?

My association with the project for establishment of Inspection and Certification (I&C) Lab directly opened new business avenues for ARAI. We initially started with a small team to establish I&C as a pilot project sponsored by MoRTH. Currently, we are establishing more than 50 Automated Testing Stations (ATS, which I&C later converted to) in Maharashtra alone. These established ATS will help identify vehicles that are unfit to ply on roads and assist in phasing them out at the end of their life.

Changes and Developments

How did you see these years of your long-dedicated service to ARAI?

I feel lucky to have witnessed ARAI's success journey, and my long association with ARAI has helped me be a part of this success. The tremendous transformation of ARAI that I witnessed in the last two decades during my service was fantastic. I wish ARAI to achieve even more success in future endeavours.

Work Culture and Values

What core values do you believe are essential for success at ARAI?

I believe values like dedication, teamwork and commitment to quality are key to success at ARAI. From my time here, I've seen how working together on projects like establishing Inspection and Certification centers helps us achieve big goals. Honesty and innovation are also important, as they drive the kind of transformation I've witnessed in the organization over the years.

Personal Growth

Tell us something about your family

My family is a small but close-knit group that has always been my biggest support. I have a loving wife who has stood by me through thick and thin, especially since my job at ARAI often involves traveling to different parts of India for projects. Her understanding and encouragement has made it easier for me to focus on my work. We have a daughter, who is a proud achievement in our lives. She has worked hard and recently completed her M.D. in Pediatrics, which means she is now a qualified pediatrician. I'm very proud of her dedication and the path she has chosen to help children. As a family, we enjoy spending time together, sharing stories from our travels daily lives. My daughter's success reminds me of the importance of balancing career and family. my wife's support has taught me the value of strong relationships. Overall, my family has brought joy and stability to my life, even with the demands of my career.

How has your time at ARAI contributed to your personal and professional growth?

My time at ARAI has helped me grow a lot both personally and professionally. Professionally, it gave me chances to lead projects like setting up the Forging Industry division and the Inspection and Certification centers, which built my skills in managing teams and working with Government officials. Personally, traveling for work and interacting with people from different states taught me about various cultures, making me more open-minded and adaptable.

What skills or lessons have you learned that you consider invaluable?

The most valuable skills I've learned are project management and building strong relationships with stakeholders, like contractors and officials from different regions. A key lesson is the importance of patience and persistence—projects like establishing the first I&C center at Nashik took time, but it taught me how to overcome challenges and contribute to something bigger, like improving vehicle safety across India.

Have you formed any lasting friendships or relationships through your work?

Yes, I've formed lasting relationships through my work at ARAI. Working on projects with government officials, contractors and colleagues from various states has led to friendships based on mutual respect and shared goals. These connections have not only helped in my professional life but also enriched my personal life by exposing me to different cultures and perspectives.

Future Outlook

What advice would you give to new employees just starting their careers at ARAI?

To new employees, I would advise staying dedicated and open to learning. Start by understanding the projects you're involved in, like those in automotive testing and be willing to travel or collaborate with teams. Build good relationships with colleagues and stakeholders, as teamwork is key here. Remember, patience pays off—I've seen how small efforts, like establishing divisions, lead to big successes.

What are your hopes and aspirations for the future of ARAI for next years?

I hope ARAI continues to grow and innovate in the automotive industry, expanding its role in areas like vehicle safety and testing. My aspiration is to see more projects like Automated Testing Stations (ATS) across more states, helping phase out unfit vehicles and making roads safer. I wish ARAI to achieve even greater success in the coming years, building on the transformation I've witnessed.

What "new" you expect to happen here? What are your suggestions?

I expect ARAI to embrace new technologies, like more advanced testing tools for electric vehicles or better digital systems for certification. My suggestion is to focus on training more young engineers and expanding partnerships with international organizations to bring in fresh ideas. This could help ARAI stay ahead in the evolving automotive world and create more opportunities for growth.

Closing Thoughts

Is there anything else you would like to share with our readers about your journey or experiences at ARAI?

One more thing I'd like to share is how rewarding it has been to see ARAI's journey from a smaller organization to one that's now a leader in automotive research. It's been a privilege to contribute to projects that make a real difference, like improving vehicle inspections for public safety.

How do you plan to celebrate this incredible milestone?

To celebrate this milestone, I plan to spend quality time with my family, including my wife and daughter, who have always supported my travels and work. Maybe a small gathering with close colleagues to reflect on the journey and perhaps a quiet moment to thank ARAI for the opportunities that shaped my career. It's not about big events, but appreciating the growth and relationships I've built over the years.

Mr. Jayant V. Bhalerao
Sr. General Manager
IMPC
bhalerao.impc@araiindia.com

2003

2003 : Establishment of Key Labs and Patent Acquisition

In 2003, ARAI made significant strides in enhancing its testing and research capabilities by establishing specialized laboratories and securing intellectual property. This included setting up of NVH Lab to address vehicle comfort and safety issues, CAE Lab for advanced simulations and an indigenously developed sled facility for crash testing simulations. Additionally, ARAI obtained a patent for innovative CNG/LPG technology, which aimed to promote cleaner fuel alternatives in the automotive sector, reflecting organization's commitment to sustainable and indigenous solutions.

2004

2004 : Certifications, Testing Innovations, and Cultural Inauguration

Year 2004 was marked by ARAI's focus on quality certifications, innovative testing methods, and community engagement. ARAI achieved accreditations for ISO 14001 (Environmental Management) and OHSAS 18001 (Occupational Health and Safety), while deploying an Integrated Management System (IMS) to streamline operations. They developed a load-based test methodology specifically for evaluating two-wheelers under real-world conditions, ensuring better performance and safety standards. To foster positive work environment, ARAI also built Ganesh Temple, blending cultural traditions with professional endeavors.

2005

2005 : Expansion, Education and Prestigious Awards

In 2005, ARAI expanded its geographical reach and educational initiatives, while earning prestigious international and national awards for excellence. Regional Centre North (RCN) became fully operational, extending ARAI's services across northern India. it established India's first Inspection and Certification (I&C) Center and launched ARAI Academy with an initial batch of 25 students, aiming to build skilled manpower in automotive research. Recognition came in the form of SAE International Award for Environmental Excellence, Golden Peacock National Award for Quality and Barcelona Award for Automotive Innovation. To strengthen its brand identity, ARAI unveiled new logo accompanied by a motto emphasizing research and innovation.

2006

2006 : Advanced Emission Testing Infrastructure

Building on its infrastructure in 2006, ARAI focused on advanced emission testing facilities to support vehicle safety and environmental standards. Under the NATRIP (National Automotive Testing and R&D Infrastructure Project) initiative, they established a new Emission Lab equipped for rigorous tests including drop, pressure and fire simulations. This enhancement allowed ARAI to conduct comprehensive evaluations of vehicle components, contributing to safer and more reliable automotive products in India.

2007

2007 : High-Profile Events and Enhanced Testing Capabilities

The year 2007 saw ARAI host high-profile events and expand its testing and monitoring capabilities, with involvement from national leaders. SIAT 2007 (Symposium on International Automotive Technology) was inaugurated by then Hon' President of india Dr. A.P.J. Abdul Kalam, highlighting ARAI's role in the automotive industry. ARAI conducted air quality monitoring for Pune City to address urban pollution concerns. Additionally, ARAI set up the CISPER EMC (Electromagnetic Compatibility) Chamber for testing electronic systems in vehicles. Regional Centre North (RCN) was transferred to NATRIP, further integrating regional operations into a national framework.

2008

2008: Specialized Studies on Emissions and Human Factors

In 2008, ARAI delved into specialized studies to understand vehicle emissions and human factors in automotive design. They conducted a study on nanoparticle emissions, which are tiny particles from vehicle exhaust that can impact air quality and health. ARAI also performed Size India anthropometry study to gather data on human body dimensions for better vehicle ergonomics and safety. Furthermore, they carried out a 2D-road profile survey to analyze road conditions, aiding in the development of vehicles suited to Indian terrains and infrastructure.

2009

2009 : New Labs, Fuel Studies and International Ties

Expanding its research scope in 2009, ARAI invested in new laboratories and international collaborations while exploring alternative fuels. A new engine lab was established under NATRIP to facilitate advanced engine testing and development. They studied the effects of 10% ethanol blend in gasoline on emissions and material compatibility, promoting eco-friendly fuel options. Regional Centre South (RCS) was started to cover southern India. Internationally, ARAI appointed a representative in Korea, strengthening global partnerships in automotive research.

2010

2010 : International Projects and Digital Advancements

The year 2010 was pivotal for ARAI's international engagements, industry attachments and digital advancements in automotive approvals. Benchmark International consulting project was undertaken for Nigerian Government, sharing expertise in automotive standards. The Forging Industry Division was attached to ARAI, broadening its scope to include metalworking processes. ARAI created an interactive CD for CMVR-TA (Central Motor Vehicles Rules - Type Approval) Handbook to educate stakeholders. They hosted first International Conference on Automotive Materials & Manufacturing (AM&M), fostering global knowledge exchange. ARAI also initiated its first international engine development project from the concept stage and launched online e-Type approval facility (DELTA), streamlining digital processes for vehicle certifications.

Directors of the Decade from 2001 To 2010

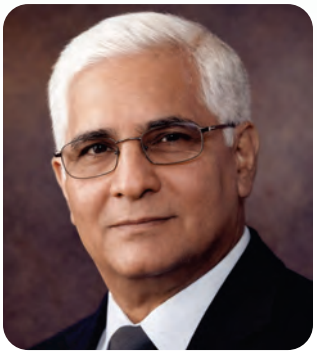

Mr. B. BANOT
1999-2005

Mr. S. R. MARATHE
2005-2014

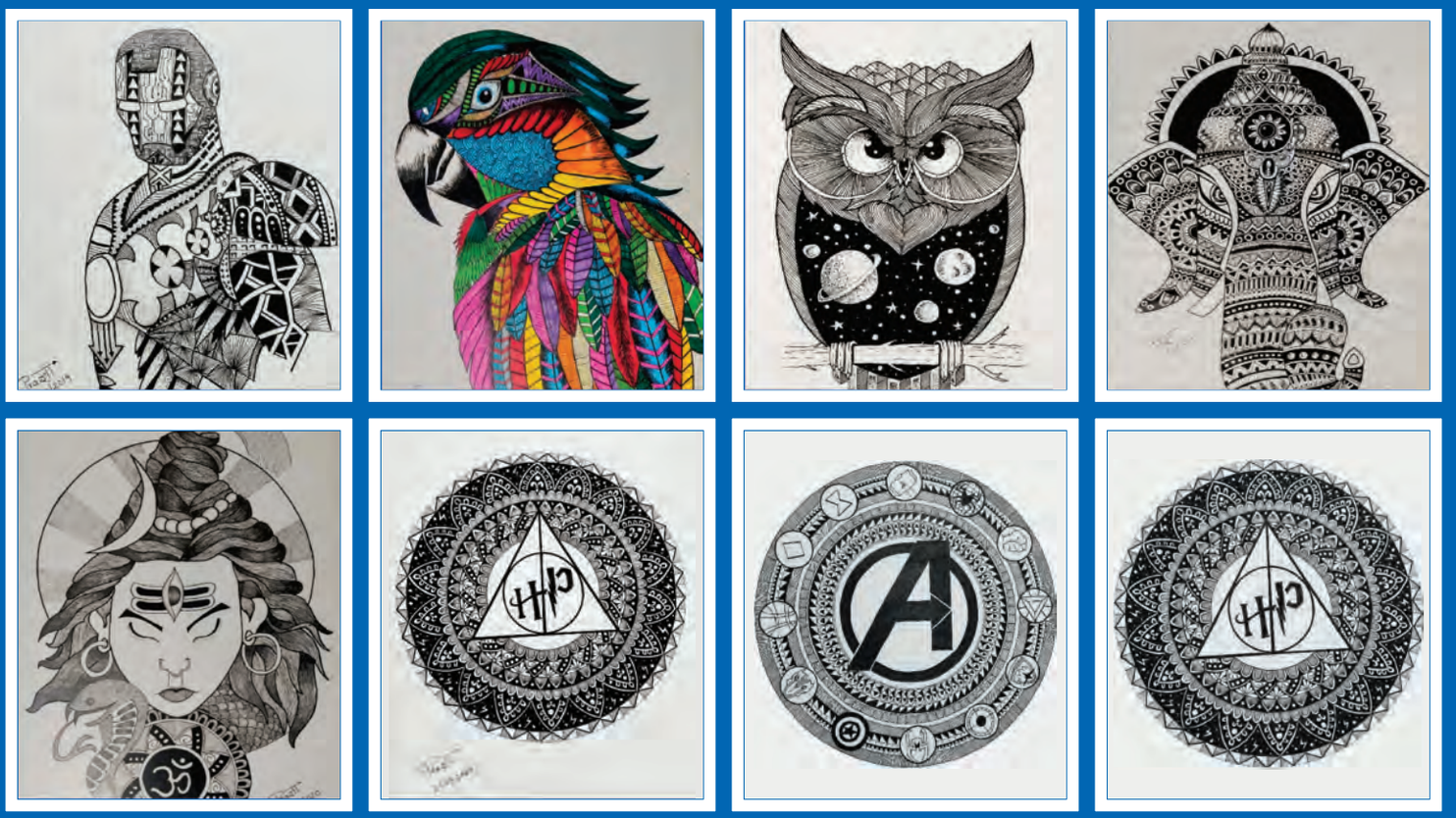

**Paintings by Ms. Pradnya Ghag,
Purchase Dept.**

डॉ. एस.एस. ठिपसे / Mr. S. S. Thipse
संपादक (Editor)

डॉ. ए. माधव राव / Dr. A. Madhava Rao
सहायक संपादक (Asst. Editor)

श्री. मोहन बागडे
Mr. Mohan Bagade

श्री. अतुल आर. ठाकरे
Dr. Atul R. Thakare

श्री. श्याम बाबू
Mr. Sham Babu

श्रीमती. वी. पी. चक्रपाणी
Mrs. V. P. Chakrapani

श्री. सरजील सैय्यद
Mr. Sarjeel Sayyed

सुश्री डायना मैथ्युज
Ms. Diana Mathews

संस्करण ३
Edition 3

ए आर ए आई
ARAI
Progress through Research

ARAI, KOTHRUD, PUNE

ARAI - HTC, CHAKAN, PUNE

ARAI - FID, CHAKAN, PUNE

Director - ARAI
The Automotive Research Association of India
Survey No. 102, Vetal Hill, off Paud Road, Kothrud, Pune 411 038. | P.B. No. 832, Pune - 411 004.
Email : info@araiindia.com